में पुल बांध कर फ़ौज तो पार उतर गयी थी जहांगीर अपने ख़ेमे में अभी इसी पार था ॥ महाबतख़ां ने सूरज निकलने से पहले दो हज़ार रजपूत तो पुल पर भेज दिये और आप दो सौ रजपूत लेकर जहांगीर के डेरे में चला गया। जहांगीर घबराकर उठा और इतना ही कहने पाया नमकहराम महाबतख़ां यह क्या है महाबतख़ां ने ज़मीन चूमी और अर्ज़ किया कि मेरे दुश्मनों ने मुझको हुज़ूर तक नहीं पहुंचने दिया तब मैं नाचार इस गुस्ताख़ी के साथ हाज़िर हुआ ॥ निदान जब जहांगीर ने अपने तईं महाबतख़ां के इख़्तियार और उस की क़ैद में पाया। नर्मी और मुलायमत के साथ बातें करने लगा महाबतख़ां जहांगीर को अपने डेरे में ले आया ॥ नूरजहां भेस बदल कर टूटी सी डोली पर सवार महाबतख़ां के सिपाहियों के दर्मियान से पुल पार अपनी फ़ौज में चली गयी। दूसरे रोज़ दर्या पायाब उतर कर सारी फ़ौज महाबतख़ां पर चढ़ा लायी। आप तीर कमान लेकर हाथी के हौदे पर सवार थी। लेकिन महाबतख़ां के सामने कुछ पेश न गयी ॥ आदमी बहुत मारे गये। बादशाह को न छुड़ा सके। नूरजहां का हाथी फ़ीलवान के मरने और सूंड़ के कटने पर दर्या में भाग गया। और फिर बहुत दूर बह कर कनारे लगा ॥ नूरजहां के साथ हौदे पर उस की दुहिती यानी नतनी भी थी निरी बालक और तीर से घायल नूरजहां हाथी से उतरी और उस लड़की के घाव में पट्टी बांधी। आख़िर थक कर वह भी अपनी क़िस्मत के भरोसे पर जहांगीर के पास महाबतख़ां की क़ैद में चली आयीं ॥

महाबतख़ां जहांगीर को ले कर काबुल की तरफ़ चला। जहांगीर ज़ाहिर में उस से ऐसा हिल मिल गया कि महाबतख़ां को इस की तरफ़ से कुछ भी खटका बाक़ी न रहा ॥ जहांगीर ने नूरजहां की सलाह बमूजिब महाबतख़ां से कह कर हुकम दिलवा दिया कि सब जागीरदार अपने अपने सवारों की मौजूदात देवें नूरजहां भी जागीरदार थी। अपने सवारों को दुरुस्त करने लगी और नये सवार इस हिक्मत से भरती

किये कि मौजूदात के दिन तक किसी को उन की तादाद से ख़बर न हुई ॥ महाबतख़ां को नूरजहां की तरफ़ से खटका हुआ लेकिन जहांगीर ने यह कह के मिटा दिया कि नूरजहां के सवार हम जाकर देख आवेंगे तुम उन के नज़दीक मत जाना। लेकिन जब जहांगीर नूरजहां के साथ उस के सवारों को देखने गया वह इतने थे कि फ़ौरन् उन्हों ने इन के हाथियों को घेर लिया और महाबतख़ां के आदमियों को जो बादशाह के साथ थे काट डाला ॥ जब महाबतख़ां ने देखा कि बादशाह और बेगम दोनों हाथ से निकल गये वहां से कूच किया। और फिर दखन में शाहजहां से जा मिला ॥

१६२७ ई० जहांगीर काबुल से कशमीर गया वहां उस को दमे का मरज़ ऐसा बढ़ गया कि लाहौर आना पड़ा। लेकिन मौत ने रास्ते ही में आ लिया साठवें बरस में दुन्या से कूच कर गया *॥

شہاب‌الدین محمد شاہجہان صاحب قران ثانی

शाहबुद्दीन मुहम्मद शाहजहां (साहिब क़िरान सानी)

जहांगीर के बाद शाहजहां बड़ी धूम धाम से तख़्त पर बैठा जैसी उस के वक़्त में सल्तनत ने रौनक़ पायी। कभी किसी के सुनने में नहीं आयी॥ जो जो इमारतें उस ने बनायीं

१६२८ ई० कभी किसी के देखने में नहीं आयीं ॥ शाहजहांनाबाद की इमारतों को देखो क़िला कैसा उमदा और जामेमस्जिद किस शान की बनी है आगरे में ताजमंज का रौज़ा देखो कि वैसी दूसरी इमारत आज तक किसी को दुन्या में नहीं मिली। एक तख़्त ताऊस † उस ने सात करोड़ दस लाख रुपये का बनवाया था कि जिस के देखने से चका चौंध आ जाती थी ॥ शाहजहां की सालगिरह में सिवाय मामूली तुलादानों के जवाहिरात से भर भर कर पियाले सदक़े उतारे जाते थे।

---

* تاریخ وفات جہانگیر ع جہانگیر از جہان عزم سفر کرد سنہ ۱۰۳۶ ہجری

† तूल इस तख़्त का छ फ़ुट और अर्ज़ चार फ़ुट एक सौ आठ लाल उस में सवा सौ रत्ती से लेकर अढ़ाई सौ रत्ती तक के लगे थे और एक सौ साठ पन्ने बत्तीस रत्ती से लेकर बहत्तर रत्ती तक के जड़े थे उसी

ख़फ़ीख़ां लिखता है कि इनाम इकराम ख़िलत तुलादान सदक़े वग़ैरः सब मिलाकर इस सालगिरह में एक करोड़ साठ लाख रुपये से कम ख़र्च नहीं पड़ते थे। टेवर्नियर फ़रासीसी सौदागर जो उस वक़्त यहां आया था अपनी किताब में लिखता है कि शाहजहां लोगों पर बादशाही नहीं करता है। बल्कि अपने लड़कों की तरह उन्हें पालता है। उस के इंतिज़ाम की ख़ूबी इसी बात से जान लेनी चाहिये कि इस शाहख़र्ची पर भी वह सिवाय सोने चांदी और जवाहिरात के चौबीस करोड़ रुपया नक़्द छोड़ मरा। और कभी रअ़य्यत से एक पैसा मामूल से ज़ियादा नहीं मांगा। ख़फ़ीख़ां शाहजहां की आमदनी तेईस करोड़ रुपया साल लिखता है। लेकिन टेवर्नियर बत्तीस करोड़ बतलाता है।

इसी बादशाह के ज़माने में यानी सन् १६३१ ई० में पुर्त- १६३१ ई०
गालवालों ने कलकत्ते के पास हुगली में जो क़िला बनाया था। बंगाले के सूबेदार ने घेर कर ले लिया।

क़ंदहार अकबर की सल्तनत के शुरू में ईरानियों ने ले लिया था। लेकिन कुछ दिन बाद फिर अकबर के क़ब्ज़े में आ गया अब जहांगीर के ज़माने से फिर ईरानियों के हाथ
में था। लेकिन उन का सूबेदार अलीमर्दांख़ां शाहजहां से आ १६३० ई०
मिला। इस लिये क़ंदहार फिर हिंदुस्तान के शामिल हो गया। यह अलीमर्दांख़ां बड़ा नामी हुआ दिल्ली की नहर इसी ने

के सायबान में तमाम हीरे और मोती टके हुए थे और झालर निरे मोतियों की लटकती थी उस तख़्त की मिहराब पर एक मोर दुम फैलाये सोने का जवाहिर से जड़ा हुआ रक्खा था दुम में बिल्कुल नीलम और छाती पर एक बड़ा सा लाल था गर्दन में सिरसठ रत्ती का मोती लटकता था एक हीरे का आवेज़ा भी उस में एक सौ सत्तरह रत्ती का था बारह चोबें जिन पर उस तख़्त का सायबान खड़ा होता था तमाम आबदार गोल नौ रत्ती से बारह रत्ती तक के मोतियों से जड़ी थीं और उस के दोनों तरफ़ जो दो छतर रहते थे उनकी डंडियां आठ आठ फुट लम्बी सारी नीचे से ऊपर तक हीरों में डूबी थीं।

बनवायी। और दौलत उस के पास इतनी थी कि लोगों की
१६४० ई० समझ में उसने कहीं से गड़ी हुई पायी॥ सन् १६४० ई० में ईरानियों ने फिर ज़ोर मारा और क़ंदहार उन के दख़ल में चला गया॥

मीर जुम्ला पहले तो दखन में हीरे की तिजारत करता था। लेकिन अब बहुत दिनों से अबदुल्लाह कुतुबशाह गोलकुंडे के बादशाह का वज़ीर हो गया था॥ अबदुल्लाह ने कई बातों से नाराज़ हो कर इस के बेटे मुहम्मद अमीन को क़ैद किया तब इस ने शाहजहां से मदद मांगी। शाहजहां की फ़ौज ने अबदुल्लाह को बहुत ज़ेर किया शाहज़ादे औरंगज़ेब के इशारे मुताबिक़ धोखा देकर उस के इलाक़े में घुस गयी॥ अबदुल्लाह ने तो औरंगज़ेब के आदमियों को साबिक़ सुलहनामे के मुवाफ़िक़ दोस्त समझा उन के खाने पीने का बंदोबस्त करने लगा। लेकिन इन्हों ने अचानक उस की राजधानी हैदराबाद को लूटना और फूंकना शुरू किया। नाचार अबदुल्लाह ने मुहम्मद अमीन को भी क़ैद से छोड़ दिया और औरंगज़ेब के लड़के सुलतान मुहम्मद को अपनी बेटी ब्याह में और एक करोड़ रुपया नज़र बादशाह के लिये दे कर अपना पिंड छुड़ाया॥ मीर जुम्ला ने शाहजहां को वह मशहूर ३१६ रत्ती का कोहनूर हीरा * नज़र दिया जो उस को किसी किसान को गोदावरी कनारे कोलूर की खान में ख़र्बुज़े का खेत जोतते हुए मिला था और अब पंजाब से मलिके मुअज़्ज़मे इंगलिस्तान यानी हिंद की क़ैसर इम्परेस विक्टोरिया की ख़िदमत में पहुंचा। वह बराबर औरंगज़ेब का मोतमद इस्साहिब बना रहा॥

१६५७ ई० शाहजहां के चार लड़के थे दाराशिकोह ४२ बरस का शुजा ४० बरस का औरंगज़ेब ३८ बरस का और चौथा मुराद भी जवान हो चुका था दाराशिकोह बहुत नेक था हर मज़हब

* शाहजहां के जौहरियों ने इसे ८८१११२५) का आंका था और कोलूर की खान में मिला कौन जाने शायद इसी सबब उस का नाम कोहनूर रक्खा गया॥

कि अच्छे फ़क़ीरों से मुहब्बत रखता मज़्हब उस का वेदान्त था। उपनिषदों का फ़ारसी में तर्जुमा उसी के हुक्म से हुआ था। औरंगज़ेब बड़ा दूरंदेश हिक्मती मस्लहत का यार और ज़ाहिर में बड़ा कड़ा मुसल्मान था शुजा शराबी और अय्याश और मुराद कुछ बेवक़ूफ़ सा गिना जाता था। औरंगज़ेब को शाहजहां के मंसूबों का हाल अपनी बहन रोशनआरा * से मिला करता था। दाराशिकोह वलीअहद था। जो जो शाहजहां उस का इख़्तियार बढ़ाता जाता था औरंगज़ेब छटपटाता था। इस के दिल में तख़्त की पूरी आर्ज़ू थी। उमेद निरी मज़्हब के बहाने से थी। सदा मौलवियों की तरह रहा करता। जो कुछ हाथ की मिहनत से मिलता उसी से अपनी गुज़रान करता। साथियों से सदा कहा करता कि मैं तो फ़क़ीर होकर मक्के चला जाऊं लेकिन क्या करूं दाराशिकोह काफ़िर है अगर इस का इख़्तियार होगा। दीन को बहुत ख़राब करेगा। निदान यही सबब था कि मुसल्मान उस को जी से चाहते थे और इस में शक नहीं कि उन्हीं की मदद से उसे सल्तनत हाथ लगी। लेकिन साथ ही यह भी याद रक्खो कि हिंदुओं के बेदिल हो जाने से यह सल्तनत बिल्कुल बे ज़ोर हो गयी। उस वक़्त तो न मालूम हुआ। लेकिन औरंगज़ेब के बाद उस का नतीजा बख़ूबी दिखलायी दिया।

शाहजहां इस अर्से में सख़्त बीमार हो गया था उमेद बचने की न थी दाराशिकोह ने बहुतेरा चाहा कि ख़बर न फैले। डाक बंद कर दी मुसाफ़िरों को चलने से रोका लेकिन यह न सोचा कि भला हिंदुस्तान में भी कभी ऐसा हो सकता है कि भेद न खुलने पावे। शुजा बंगाले का सूबेदार और मुराद गुजरात का सूबेदार दोनों अपनी अपनी फ़ौजें लेकर दिल्ली को

---

* शाहज़ादियां भी तालीम पाती थीं अकबर के ४ जहांगीर के २ शाहजहां के १ और औरंगज़ेब के भी १ थीं लेकिन इन १६ में ब्याही ख़ाली ६ गयी थीं।

रवाना हुए औरंगज़ेब दक्षन का सूबेदार था मुराद को लिख भेजा। कि तख़्त आप को मुबारक हो मैं मक्के जाने की बिलकुल तय्यारी कर चुका हूं लेकिन दीन का काम समझ कर जब तक कि इस काफ़िर दारा का कुछ बंदोबस्त न होजावे मैं भी तुम्हारा मददगार हूं और फिर मालवे में आकर मुराद से मिल गया॥

शुजा तो बनारस के पास दाराशिकोह के लड़के सुलेमान-शिकोह से शिकस्त खाकर बंगाले को लौट गया। मुराद औरंग-ज़ेब के साथ उज्जैन के पास राजा जसवंतसिंह को जिसे दारा-शिकोह ने उन के मुक़ाबले को भेजा था शिकस्त दे कर आगरे से एक मंज़िल के तफ़ावत पर आन पहुंचा॥ दाराशिकोह तख़-मीनन् एक लाख सवार ले कर उन के सामने आया। बड़ी भारी लड़ाई हुई मुराद का हौदा तीरों से साही की पीठ बन गया॥ वह आप भी कई जगह घायल हुआ। हाथी ने मैदान से भागना चाहा तो पैरों में कठबंधन डलवा दिया॥ राजा राम-सिंह केसरिया बाना पहने मोतियों का हार सिर में लपेटे मुराद के हाथी से जा भिड़ा। और भाला चलाया॥ मुराद ने उस का भाला तो ढाल पर रोका। और राजा को एक ही तीर से मार डाला॥ उस के मरते ही रजपूत बड़े जोश में आये। और ढेर के ढेर वहां उन की लाश के लग गये॥ औरंगज़ेब चिल्ला चिल्ला कर अपने सिपाहियों को यही सुनाता था "अल्लाहु माकुम" यानी अल्लाह तुम्हारे साथ है राजा रूपसिंह घोड़े पर से उतर पड़ा और दौड़ कर अपनी तलवार से औरंगज़ेब के हौदे का रस्सा काटने लगा। औरंगज़ेब उस की बहादुरी देख कर ऐसा ख़ुश हुआ कि पुकारा यह मारा न जावे लेकिन उस हुजूम में कौन सुनता था॥ बात की बात में उस की धज्जियां उड़ा दीं दारा की फ़ौज को ग़लबा था। लेकिन उस के हाथी को एक बान आ लगा इस सबब से उस ने भागना चाहा दारा-शिकोह नीचे कूद पड़ा॥ फ़ौज ने जाना कि वह मारा गया फ़ौरन सब की सब भाग गयी दारा को भी भागना पड़ा। मार

शरम के बाप के सामने तो न गया अपनी बेगम और लड़कों को ले कर सीधा लाहोर को रवाना हुआ। औरंगज़ेब ने आगरे पहुंच कर बहुत मिन्नत समाजत के साथ शाहजहां के पास पयाम भेजा कि यह मुक़ाम नाचारी का था मैं आप का वही फ़र्मांबर्दार लड़का हूं लेकिन साथ ही क़िले में जा बजा चौकी पहरा भी बैठा दिया। कि जिस में शाहजहां किसी के साथ बात चीत या ख़त किताबत न कर सके शाहजहां सात बरस तक इस के बाद जिया। औरंगज़ेब उस की बड़ी इज़्ज़त और ख़ातिर करता रहा। लेकिन सल्तनत उस की इसी तारीख़ तक गिनी जाती है आगे सिक्का ख़ुतबा औरंगज़ेब का चला। शाहजहां ने ३० बरस बादशाही की। ६० बरस की उमर में बादशाही उस से छीनी गयी और ७४ बरस की उमर में उस ने वफ़ात पायी।

जब मुराद का कुछ काम बाक़ी न रहा औरंगज़ेब ने एक रोज़ उस की ज़ियाफ़त की और इतनी शराब पिलायी कि वह बेहोश होगया। तब उस के हथियार उतरवा कर और पैरों में बेड़ियां डलवा कर ग्वालियर के क़िले में भेज दिया।

✓ मुइज़ुद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर

मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर

औरंगज़ेब ने तख़्त पर बैठ कर अपना लक़ब आलमगीर रक्खा। मुलतान के पास तक दाराशिकोह का पीछा किया। लेकिन जब सुना कि दाराशिकोह मुलतान से सिंध की तरफ़ भाग गया और शुजा बंगाले से आता है फ़ौरन् इलाहाबाद की तरफ़ मुड़ा। खजुए में शुजा के साथ लड़ाई हुई शुजा शिकस्त १६५८ ई० खाकर फिर बंगाले की तरफ़ भागा और जब वहां भी पैर न जम सका तो अराकान में जाकर वहांवालों के हाथ से अपने कुनबे समेत मारा गया।

दाराशिकोह मुलतान से भाग कर सिंध और कच्छ होता हुआ गुजरात में पहुंचा। और वहां के सूबेदार से मिल कर बीस हज़ार आदमी अजमेर में जमा कर लाया। लेकिन वहां

औरंगज़ेब से शिकस्त खाकर क़ंदहार की तरफ़ भागा। रास्ते में मुसीबतें बहुत उठायीं जब सिंध की सरहद्द पर पहुंचा अटोथन के हाकिम मलिक जीवन ने दग़ा की और इस को इस के लड़के समेत क़ैद कर के औरंगज़ेब के पास ले आया *। औरंगज़ेब ने बड़ी खुशियां मनायीं दाराशिकोह को पहले तो हाथों में हथकड़ियां और पैरों में बेड़ियां डाल कर बे झूल के हाथी पर बाज़ार में घुमाया। और फिर क़ैदख़ाने में भेज कर इस बहाने से कि उस ने मुसलमानों का दीन छोड़ दिया मौलवियों से फ़तवा लेकर जल्लादों के हाथ से क़त्ल करवा डाला और उस के लड़के सिपहरशिकोह को क़ैद रहने के लिये ग्वालियर के क़िले में भेज दिया।

सन १७०० ई० के शुरू तक मरहटों का नाम कुछ ऐसा मशहूर न था दखन के बादशाहों की फ़ौज में सवारों की नौकरी अलबत्ता करने लगे थे। लेकिन हुकूमत के दर्जे को नहीं पहुंचे थे। मालूजी भोंसला दखन के हाकिमों में से एक के यहां कुछ सवारों के साथ नौकर था। और लूकजी यादवराव उसी हाकिम के तहत में दस हज़ार आदमियों का अफ़सर था। एक दिन मालूजी भोंसला के लड़के साहूजी को अपनी लड़की के साथ गोद में बैठाकर हंसी की राह से कहने लगा कि यह तो अच्छा जोड़ा ब्याहने लायक़ है मालूजी भोंसला ने उसी दम बिरादरीवालों को जो वहां मौजूद थे गवाह ठहरा दिया और कहा कि देखो भाइयो लूकजी यादवराव ने मेरे बेटे को अपनी बेटी दी। नाचार लूकजी यादवराव को अपनी बेटी साहजी को साथ ब्याहनी पड़ी। कहते हैं कि यादवराव के गोत वाले यदुवंशी रजपूतों से निकले थे। और मुसलमानों की चढ़ाई से पहले देवगढ़ के राजा भी यदुवंशी कहलाते थे। तो अगर लूकजी यादवराव का निकास इन्हीं देवगढ़वाले

* यह वही मलिक जीवन है जिस को शाहजहां ने किसी जुर्म में क़त्ल का हुक्म दिया था और दाराशिकोह ने सिफ़ारिश कर के बचा लिया था।

राजाओं के घराने से हुआ हो कुछ अचरज नहीं निदान मालूजीभोंसला की क़िस्मत ज़ोर पर थी देखते ही देखते अहमदनगर के बादशाह की नौकरी में पांच हज़ार सवारों का जागीरदार हो गया। और पूना उसे जागीर में मिला। मालूजीभोंसला का पोता यानी लूकजी यादवराव का नाती सेवाजी बड़ा नामी और इक़बालमंद हुआ। यह सन १६०० ई० में जनमा था और उसी से मरहटों का राज क़ाइम हुआ।

सेवाजी अभी पूरा सोलह बरस का भी नहीं होने पाया था कि बदन में उस के जवांमर्दी का ख़ून जोश में आया। रात दिन शिकार खेलने और डाका मारने से काम था और वही वहां के जंगल पहाड़ों में जंगली और पहाड़ी आदमियों के साथ उसे आराम था। वह उन बिकट जंगलों की राह और टेढ़े पहाड़ों के घाटों से ख़ूब वाक़िफ़ होगया था और एक २ जंगली आदमी का नाम तक जान लिया था। बीजापुर की सल्तनत कमज़ोर पड़ गयी थी सेवाजी डाका मारते मारते बीजापुर की अमलदारी के क़िले लेने लगा। पहला क़िला जो उसने अपने दख़ल में किया पूना से दस कोस पर तोरना नाम था। बीजापुर के बादशाह ने दग़ा कर के सेवाजी के बाप साहजी को क़ैद कर लिया। तब सेवाजी ने शाहजहां को अर्ज़ी लिखी शाहजहां ने उसके बाप को भी छुड़वा दिया और उसे पंज हज़ारी यानी पांच हज़ार सवारों के अफ़सर का ख़िताब दिया। जब बाप छुट गया। सेवाजी फिर अपना इलाक़ा बढ़ाने लगा। बीजापुर के बादशाह ने अफ़ज़लख़ां के तहत में एक बड़ा भारी लशकर उस के ज़ेर करने को भेजा सेवाजी ने कहला भेजा कि आप इतना लशकर क्यों लाये हैं मैं तो आप का चाकर हूं। लशकर से ख़ौफ़ खाता हूं अगर आप अकेले चले आवें जो फ़र्मावें मैं बजालाने को मौजूद हूं। अफ़ज़लख़ां मलमल का जामा पहने एक तेग़ा हाथ में लिये अकेला अपने लशकर से बाहर निकला। सेवाजी भी प्रतापगढ़ के पहाड़ी क़िले से

बाहर आया ॥ लेकिन अंगरखे के नीचे फ़ौलादी ज़िरह पहने हुए । और हाथों में शेरपंजा * चढ़ाये हुए ॥ सिवाय इस के उस ने एक छुरा भी कमर में छुपा लिया । जब अफ़ज़लख़ां ने सेवाजी को गले से लगाया सेवाजी ने उसे शेरपंजे से भींच लिया और फ़ौरन् छुरे से उस का काम तमाम किया ॥ सेवाजी का इशारा पाते ही उस की तमाम फ़ौज जो पहाड़ों में छिपी थी निकल आयी । और अफ़ज़लख़ां की फ़ौज पर जो बिलकुल ग़ाफ़िल थी इस तेज़ी के साथ गिरी कि वह उसी दम तीन तेरह हो गयी ॥

सेवाजी को तो लूट मार से काम था । कौन किस का इलाक़ा है यह उसे कहां ख़याल था ॥ जब औरंगज़ेब के क़िलों पर भी उस ने हाथ डाला । औरंगज़ेब का मामू शाइस्ताख़ां जो उस वक़्त दखन का सूबेदार था फ़ौज लेकर मुक़ाबले को चढ़ा ॥ सेवाजी सिंगार या सिंहगढ़ के पहाड़ी क़िले पर चढ़ गया । शाइस्ताख़ां छ कोस पर पूना में उसी मकान के दर्मियान ठहरा जिस में सेवाजी कुछ दिनों रह चुका था ॥ निदान एक दिन वह रात को २५ आदमी साथ ले के भेस बदले हुए किसी बरात के साथ शहर में घुस आया । और एक चोरदर्वाज़े की राह पहरेवालों से बच कर ठीक उस जगह जा पहुंचा जहां शाइस्ताख़ां पलंग पर सोता था ॥ सेवाजी की तलवार से शाइस्ताख़ां की सिर्फ़ दो उंगलियां कटने पायीं खिड़की की राह कूद कर जान बचा गया । लेकिन लड़का उस का काम आया ॥ सेवाजी उसी दम फुर्ती के साथ वहां से निकल कर साथियों समेत मशालें जलाये अपने पहाड़ी क़िले पर चढ़ गया । और शाइस्ताख़ां का लशकर सारा देखता ही
१६६५ ई० रह गया ॥ सन १६६५ ई० में औरंगज़ेब ने राजा जयसिंह और दिलेरख़ां को दखन की मुहिम्म पर भेजा । सेवाजी ने पयाम सुलह का दिया और राजा जयसिंह के पास चला।

---

* एक तरह का हथियार है शेर के पंजे की तरह ॥

आया। राजा जयसिंह ने उस की ऐसी ख़ातिरदारी की और औरंगज़ेब से उस के नाम ऐसा एक फ़र्मान मंगवाया कि वह बिलकुल ताबे हो गया। और अपने लड़के संभा को लेकर बादशाह की क़दम्बोसी के लिये दिल्ली में चला आया। लेकिन वहां उसकी ख़ातिरदारी कुछ अच्छी न हुई और इस बात से जब उस ने अपनी दिलगीरी ज़ाहिर की औरंगज़ेब ने उस पर पहरे बिठला दिये सेवाजी बड़े बड़े खांचों * में फ़क़ीरों को खाने के लिये भेजा करता था एक रोज़ बेटे समेत दो खांचों में बैठ कर पहरों के बीच से निकल गया। और कुछ दिनों बाद फ़क़ीरी भेस में पूना आ पहुंचा और फिर धीरे धीरे उस ने अपना इलाक़ा बहुत बढ़ाया और बड़ा नाम पाया॥

इसी साल में शाहजहां का परलोक हुआ। अगर्चे वह १६६६ ई०
क़िले से बाहर नहीं निकलने पाता था लेकिन यहां औरंगज़ेब उसे बहुत इज़्ज़त और अदब के साथ रखता था॥

यह ज़माना औरंगज़ेब की पूरी तरक्क़ी का था उधर कश्मीर के सूबेदार ने हिमालय पार छोटा तिब्बत फ़तह कर लिया था। और इधर बंगाले के सूबेदार ने चटगांव का इलाक़ा बादशाही अमलदारी में मिला दिया था। और फिर इस लंबे चौड़े मुल्क के दर्मियान झगड़ा फ़साद कहीं कुछ न था। अरब और हबश से लेकर ईरान तूरान तक के एल्ची † उस

* यानी दौरा यानी टोकरा।

† एक साल पांच बादशाहों के एलची आये बड़ा भारी दर्बार हुआ ईरान के एल्ची की बड़ी ख़ातिर हुई शहर की आईनबंदी की गयी सड़क पर कोसों तक सवार खड़े किये गये उमरा इस्तिक़बाल को गये तोपों की सलामी हुई शाह का ख़रीता औरंगज़ेब ने अपने हाथ से लिया पच्चीस घोड़े बीस शुतुर ईरानी कमख़ाब पार्चे क़ालीन बेदमुश्क के घड़े तुहफ़ा में गुज़रे मक्के के शरीफ़ ने अरबी घोड़े और एक झाड़ू जिस से काबा झाड़ा जाता था भेजी यमन के बादशाह और बसरे के हाकिम ने भी घोड़े भेजे थे इंगलिस्तान के बादशाह जेम्स के एल्ची ने एक बैल का सींग कुछ हाथी दांत एक गोरख़र और [illegible] गुलाम जो ज़रूर हबशी रहे होंगे नज़र किये॥

के दर्बार में हाज़िर थे लेकिन ऐसी सल्तनतों में क्या यह अमन चैन कुछ अर्से तक ठहर सकता था ?॥

औरंगज़ेब ने जिज़्या फिर जारी किया। इस काम के लिये एक मुल्ला मुक़र्रर हुआ कि हिन्दू लोग अपने धर्म के कामों में कुछ धूम धाम न करने पावें तेवहार और पर्वों पर जो मेले होते थे वह भी बंद कर दिये उस ने तो यहां तक हुक्म दे दिया था कि सिवाय मुसल्मानों के कहीं कोई हिंदू बादशाही नौकरी न पावे लेकिन तामील न हो सकी तामील तो किसी हुक्म की पूरी न हुई लेकिन दिल हिंदुओं का मुसल्मानों की सल्तनत से पूरा हट गया॥ जो कुछ कि उस वक़्त इन की सल्तनत का हाल था उसी एक ख़त से ज़ाहिर हो जाता है जो किसी राजा ने औरंगज़ेब को लिखा था और ख़फ़ीख़ां ने अपनी तवारीख़ में दर्ज करदिया है। ख़ुलासा उस का यह है॥ कि देखिये अक्बर जहांगीर और शाहजहां के वक़्त में इस मुल्क का क्या हाल था और अब क्या हो गया है। जब सब फ़िर्के और सब मज़हब के आदमी नाराज़ हैं और आमदनी दिन पर दिन घटी जाती है जब रअय्यत पर ज़ुल्म होता है और ख़ज़ाना ख़ाली पड़ता जाता है पुलिस को कोई ख़बर नहीं लेता और ख़ुद शहरों में ख़तरा रहता है तो यह बेड़ा के दिन चल सकता है ?॥

राजा जसवंतसिंह जोधपुरवाला काबुल की मुहिम्म पर मर गया था उस की रानी और दो बालक लड़के बादशाह की पर्वानगी का इंतज़ार न कर के दिल्ली चले आये बादशाह ने उन्हें क़ैद करनेका अच्छा बहाना पाकर घेर लेने का हुक्म दिया अगर्चे रानी और लड़कों को तो उनके साथी रजपूत भेस बदला कर निकाल ले गये पर हिंदुओं का दिल रहा सहा और भी टूट गया॥ बड़ा लड़का अजीतसिंह जोधपुर की गद्दी पर बैठा। और जब तक औरंगज़ेब जीता रहा यह अजीतसिंह चाकरी बजा लाने के बदले लड़ भिड़ कर सदा उसे तंग करता रहा॥ राना

राजसिंह उदयपुर वाला * भी उस से मिल गया। और जिज़या देने से इनकार किया॥ फ़ौजें जोधपुर और उदयपुर पर भेजी १६७९ ई०
गयीं बादशाह का उन को हुक्म था कि मुल्क वीरान कर डालें। गांव सब फूंक दें॥ दरख़्त फलदार काटने से बाक़ी न छोड़ें। बाल बच्चे और औरतें सब को पकड़ लावें॥

सन १६८० ई० में सेवाजी ५३ बरस का होकर परलोक को १६८० ई०
सिधारा। बेटा उस का संभाजी बदचलन था †॥

थोड़े ही दिनों बाद औरंगज़ेब ने दखन पर बड़ी भारी फ़ौज लेकर चढ़ाई की गोलकुण्डे के बादशाह अबुल्‌हसन ने जो तानाशाह के नाम से मशहूर है संभाजी से आपस की मदद का क़ौल क़रार किया था इसी लिये औरंगज़ेब ने पहले कुछ फ़ौज गोलकुण्डे पर भेजी॥ बादशाह तो क़िले में जा छुपा। और हैदराबाद तीन दिन तक बराबर लुटा किया॥ आख़िर बादशाह ने बहुत सा रुपया दे कर किसी तरह उस दम यह बला अपने सिर से टाली। और औरंगज़ेब के साथ सुलह कर ली॥ औरंगज़ेब को इधर से जो फ़ुर्सत मिली सारी फ़ौज ले कर बीजापुर पर गिरा। और उस शहर को आ घेरा॥ थोड़े ही
दिनों में दीवारें टूट गयीं औरंगज़ेब तख़्तरवां पर अंदर गया १६८६ ई०
बालक बादशाह को क़ैद कर दिया। और उसका सारा इलाक़ा अपनी अमल्‌दारी में मिला लिया॥ जब बीजापुर क़ब्ज़े में आ गया इस बहाने से कि गोलकुण्डे का बादशाह काफ़िरों को
पनाह देता है फिर यकायक उसे आ दबाया। सात महीने के १६८० ई०
मुहासरे में गोलकुण्डा भी टूट गया और बीजापुर की तरह यह मुलाक़ा भी औरंगज़ेब के हाथ लगा॥

---

* कहते हैं कि उदयपुरवालों ने कभी अपनी लड़की बादशाह को नहीं दी लेकिन औरंगज़ेब रुक़्क़ुआ़ति आ़लमगीरी में अपने लड़के कामबख़्श को लिखता है॥

ازعیوری والدهٔ شما در بیماری بامن بوده ازانهٔ رفعت داده

† सेवाजी और संभाजी का ठीक नाम शिवाजी और शंभुजी मालूम होता है॥

इन दोनों इलाक़ों का हाथ लगना गोया औरंगज़ेब की सारी आर्ज़ुओं का पूरा होना था। पर सच पूछो तो हम इसी तारीख़ से दिल्ली की सल्तनत का घटना क़रार देते हैं इस में किसी तरह का शक नहीं कि तैमूरी ख़ानदान के ज़वाल का बीज इसी वक़्त में बोया गया टहनियां और पत्ते उस में चाहे जब निकलें बीजापुर और गोलकुण्डे की बादशाहियों से दखन में एक तरह का इन्तिज़ाम बंधा हुआ था और मरहटों पर बड़ा दबाव था। इन के टूटते ही वहां हर तरफ़ ग़दर मच गया। जो सवार सिपाही उन के नौकर थे वह भी अक्सर मरहटों से आ मिले मरहटों ने जी खोल के लूट मार करना शुरू किया। औरंगज़ेब की यही बड़ी तारीफ़ है कि अपने जीते जी सल्तनत में ख़लल नहीं पड़ने दिया पर आसार ज़वाल के उसे मालूम हो गये थे अकबर के वक़्त तक भी बू सिपहगरी की बाक़ी थी। उस के सर्दारों में मर्द मुल्क की चालाकी देखने में आती थी। लश्कर बादशाह का सब से बड़ा ज़ेवर था। और उसी की दुरुस्ती का सदा उसे ख़याल था। लेकिन जहांगीर और शाहजहां के ज़मानों में ख़ौफ़ ख़तर कम और अमन चैन बहुत रहने के सबब ऐश इशरत तो बढ़ गयी। पर जिस को सिपहगरी कहते हैं बिल्कुल जाती रही। सदा से यही दस्तूर चला आता है कि कंगालों को जब हौसिला होता है बड़े बहादुर बन जाते हैं। और जो कुछ चाहते हैं पाते हैं। और जब बहुत मिल जाता है ऐश में पड़ कर ऐसे बोदे हो जाते हैं। कि फिर उसी तरह जैसा उन्हों ने औरों को दबाया था नये हौसिलेवाले उन्हें दबा लेते हैं। इसी तरह दाम्यूब पारवालों ने रूमियों को दबाया। इसी तरह अरबवालों ने ऐरानियों को दबाया। इसी तरह तातारवालों ने चीनियों को दबाया। और अब आख़िरी ज़माने में इसी तरह फ़रंगिस्तानवालों ने सारी दुनया को दबाया। कारख़ाना इन का भी अब बहुत बढ़ गया है पर इल्म का इन में ऐसा रवाज है और दिन पर दिन और भी ऐसा होता चला जाता है कि ऐय्याशी में

व पड़ कर ये सिपहगरी के दर्मियान और भी ज़ियादा दुरुस्त होते जाते हैं। अगर दौलत हश्मत बढ़ जाने के सबब आराम तलबी से कुछ बदनी ताक़त घट भी जाती है तो इल्म के वसीले से ऐसी ऐसी तोप बंदूक़ जहाज़ और नयी नयी तरह के औज़ार और हथयार बनाते चले जाते हैं कि जिन से एक एक आदमी में सौ सौ हज़ार हज़ार बल्कि लाख लाख का ज़ोर हासिल कर लेते हैं।

निदान अब ज़रा औरंगज़ेब की फ़ौज पर निगाह करनी चाहिये। ज़रा इस के सर्दारों के घोड़ों को देखना चाहिये। दुम और यालें बिल्कुल रंगी हुई। सोने चांदी के साज़ सिर से पैर तक लदे हुए कलग़ियां बहुत लंबी लंबी पैरों में झांझनें बजती हुई। मोटे इतने कि जितने लंबे शायद उसी के क़रीब क़रीब चौड़े। और फिर चारजामे उन पर मख़मली ज़र्दोज़ी बड़े भारी पड़े हुए और उन में सुरागाय की दुम के चवर दोनों तरफ़ लटकते हुए। सवार घोड़ों से भी ज़ियादा देखने के लायक़ हैं कोई अपने से ज़ियादा भारी दगला और ज़िरह बकतर पहने हुए। कोई घेरदार जामा और शाल दुशाले लपेटे हुए। लेकिन चिहरे ज़र्द रात के जागे नशे में चूर या दवा खाते पीते। दस क़दम घोड़ा चला घोड़े को पसीना आया सवार बेहोश हो गया अगर दूर चलना पड़ा दोनों बेदम होकर गिर पड़े। जैसे सर्दार वैसे ही उन के पियादे और सवार लश्कर में जहां दस सिपाही तो सौ बनिये दुकानदार भांड़ भगतिये, रंडी छोकरे नौकर ख़िदमतगार ख़ानसामां रसद कहां को मिल सकती। डेरे डंडे ऐश इशरत के साज़ समान इतने कि कभी अच्छी तरह बारबर्दारी की तद्बीर न हो सकती। तलवार पीछे रह जाय मुज़ाइक़ा नहीं पर हुक़्क़ा साथ रहना चाहिये। दुश्मन वार किये जाय परवा नहीं पर चिलम न जलने पावे। उस वक़्त का एक फ़रासीसी इस फ़ौज की ख़ूब तारीफ़ लिखता है वह लिखता है कि तनख़्वाहें बहुत बड़ी बड़ी और चाकरी कुछ भी नहीं न कोई पहरा चौकी देता है। न कोई दुश्मन से

मुक़ाबला करता है। और बड़ी से बड़ी सज़ा हुई। तो एक दिन की तनख़्वाह कटगयी। जिमेली करेरी * ने मार्च सन्
१६९५ ई० १६९५ ई० में औरंगज़ेब की छावनी गलगले में देखी थी वह लिखता है कि दस लाख से ऊपर आदमी थे। और डेढ़ कोस में तो निरे बादशाह और शाहज़ादों के डेरे खड़े थे †। इन को काम पड़ा उन मरहटों से जो अंगरखा जांघिया एकपेची पगड़ी पहने कमर कसे हाथ में भाला दक्खनी घोड़ों पर सवार तीस कोस तो हवा खाने को घूम आते थे। न थकते न मांदे होते थे। जो बाजरे की रोटी पयाज़ के साथ उन का खाना था। और घोड़े का ज़ीन तकिया ज़मीन बिछौना और आसमान शामियाना था।

निदान औरंगज़ेब इन की फ़िक्र ही में था कि इस के एक सर्दार ने कहीं से पता ठिकाना लगाकर संभाजी को बेख़बर संगमेश्वर के बाग़ में जा घेरा। वहां वह थोड़े ही से आदमियों के साथ जी बहला रहा था नशे में होने के सबब भाग न सका। यह उसे औरंगज़ेब के पास क़ैद कर लाया। औरंगज़ेब ने इस से कहा कि तू मुसल्मान हो जा लेकिन उस ने ऐसा कड़ा जवाब दिया कि औरंगज़ेब ने गर्म लोहे से उस की आंख निकलवा कर और जीभ कटवा कर उसी दम मरवा डाला।

संभाजी का लड़का साहू भी कुछ दिनों बाद क़ैद में आगया लेकिन उस का भाई राजाराम उसी तरह लड़ता भिड़ता रहा ज्यों ज्यों औरंगज़ेब इन मरहटों को दबाने की फ़िक्र करता था त्यों त्यों ये और भी ज़ोर पकड़ते जाते थे औरंगज़ेब की फ़ौज घटती थी इन का शुमार बढ़ता था। औरंगज़ेब कोई तद्बीर बाक़ी नहीं छोड़ता था लेकिन इन से दिन पर दिन तंग होता जाता था।

---

* Gemelli Carreri.

† बर्नियर लिखता है कि इस फ़ौज को शिकस्त देने के लिये २५००० फ़रासीसी काफ़ी हैं।

यहां तक कि इक्कीसवीं फ़रवरी सन १७०७ ई० को अहमद- १७०७ ई०
नगर में पचास बरस बादशाही करके नवासी बरस की उमर में दुन्या से सिधारा *। और हिंदुस्तान का आख़िरी मुसल्मान बड़ा बादशाह हो गया॥

यह इतना बूढ़ा था पर तो भी सल्तनत के कामों से कभी जी नहीं चुराता। ज़रा ज़रा काम आप देखता आने जाने वालों से सब तरफ़ की ख़बर लेता रहता॥ बे उसके हुक्म कुछ भी न होता। दखन की लड़ाइयों में वह जवान सिपाहियों से भी ज़ियादा सख़्तियां सहता॥ इस बादशाह के अक़्लमंद और हिम्मत वाले होने में किसी तरह का शक नहीं लेकिन दिल इस का बहुत छोटा था। मज़हब की ज़िद से हिंदुओं को यकबारगी नाराज़ कर दिया बनारस में विश्वेश्वर और बिन्दुमाधव का और मथुरा में गोविन्ददेव का मशहूर मंदिर तोड़ा॥ जो रजपूत जी से अकबर की चाकरी करते थे उन्हीं ने इस का मुक़ाबला किया। मरहटों का भी बढ़ गया बख़्त पाकर यही मुसल्मानों की सल्तनत के ज़वाल का बहुत बड़ा सबब हुआ आदमी का दिल भी भगवान ने कैसा बनाया है बाप को क़ैद करके और भाइयों को मार के तख़्त पर बैठा। इस में कुछ गुनाह न समझा॥ और मरते दम लिख गया कि टोपियां सी कर जो मैं बेचता था उस में का साढ़े चार रुपया बाक़ी है वही मेरे कफ़न में ख़र्च करना। और क़ुरान लिख कर जो मैं ने ८०५) रुपया जमा किया है उसे फ़क़ीरों को बांट देना॥ गोया इसी बात से वह नेकी का झंडा बन गया। जो हो मरते वक़्त उस के जी में बड़ा पछतावा था॥ अपने लड़के कामबख़्श को लिखता है मैं ने बड़े गुनाह किये

* تاریخ تولد عالمگیر آفتاب عالمتاب سنه ۱۰۲۸ هجری
تاریخ جلوس عالمگیر آفتاب عالمتاب سنه ۱۰۶۸ هجری
تاریخ وفات عالمگیر آفتاب عالمتاب سنه ۱۱۱۸ هجری

है देखा चाहिये क्या सज़ा मिलती है। मौत दिन पर दिन नज़दीक आती जाती है॥

जिमेलीकरेरी ने औरंगज़ेब को ७८ बरस की उमर में देखा था। लिखता है कि क़द नाटा था बदन दुबला पीठ झुकी हुई नाक लंबी डाढ़ी गोल बिल्कुल सफ़ेद सादा कपड़ा पहने पगड़ी में एक बड़ासा पन्ना लगाये छड़ी के सहारे से अपने अमीरों के दर्मियान खड़ा लोगों से अर्ज़ियें लेकर बेऐनके आप पढ़ता और उन पर हुक्म लिखता जाता था और चिहरा उस का इस काम में बहुत ख़ुश मालूम होता था॥

بہادر شاہ

बहादुरशाह

औरंगज़ेब के तीन लड़के थे आज़म मुअज़्ज़म और कामबख़्श यहां लश्कर में तो आज़म तख़्त पर बैठा। और वहां काबुल में मुअज़्ज़म ने ताज बादशाही का सिर पर रक्खा॥ आख़िर आगरे के पास दोनों में बड़ी सख़्त लड़ाई हुई आज़म मारा गया। मुअज़्ज़म बहादुरशाह के नाम से हिंदुस्तान का बादशाह हुआ॥ कामबख़्श भी दखन में इस से लड़ कर ऐसा घायल हुआ। कि उसी दिन दुन्या से सिधारा॥ आज़म ने दखन से मुअज़्ज़म के मुक़ाबले को आते वक़्त साहू को सुलह के वादे पर क़ैद से छोड़ दिया था। और फिर वहां के सूबेदार ने उसे चौथ देने में कुछ हुज्जत तकरार न की इस लिये बहादुरशाह को दखन की तरफ़ से ख़ातिरजमई रही लेकिन उत्तर में तरद्दुद का एक नया सामान पैदा हुआ॥

पंदरहवीं सदी में कबीर की तरह नानकशाह ने सिक्खों का एक नया मज़्हब निकाला। ग़रज़ उसकी शायद यह थी कि हिन्दू मुसल्मान एक होजावें मुसल्मानों को यह बहुत बुरा लगा अक्बर के बाद साल ही के अंदर उन के गुरू को मार डाला॥ तब तो सिक्ख बिगड़े। मुसल्मानों को मिलाने के बदल उनके नाश करने पर मुस्तइद होगये॥ चाहे जितने काटे मारे गये। पर बादशाही इलाक़ों में बखेड़ा उठाने से बाज़ न रहे॥

जब फ़ौज आती पहाड़ों में भाग जाते। जब क़ाबू पाते फिर लूट मार मचाते। इन का दसवां गुरु गोविंदसिंह जो सन् १७०८ ई० में गद्दी पर बैठा। बड़ा नामी और हौसिलेवाला हुआ। पर तब तक जमाअत की कमी के सबब इन का सितारा चमकने न पाया। आख़िर वह किसी अपने दुश्मन के हाथ से नांदेड़ में मारा गया।

निदान जब इन सिक्खों ने सरहिंद के हाकिमों को शिकस्त दे कर वह शहर लूटा और फूंका और क़त्ल किया। और सहारनपुर तक हर तरफ़ ग़दर मचा दिया।

बहादुरशाह को इन के मुक़ाबले के लिये आप जाना पड़ा ये फिर पहाड़ों में भाग गये बहादुरशाह लाहौर पहुंचकर ७१ बरस की उम्र में दुनया से सिधारा। यह पूरे पांच बरस भी बादशाही नहीं करने पाया। १७१२ ई० جہاندار شاہ

जहांदारशाह

लेकिन उस का बड़ा बेटा जहांदारशाह तख़्त पर बैठने से साल ही भर के अंदर मारा गया इस ने एक कसबी रख ली थी। उस के रिश्तेदारों का दर्जा सब से ऊपर कर दिया यह बात दर्बारवालों को बहुत बुरी लगी। जब इस का भतीजा फ़र्रुख़सियर बंगाले से चढ़ कर आया और यह आगरे के पास एक भारी लड़ाई में शिकस्त खाकर दिल्ली को भागा। इसी के वज़ीर ज़ुल्फ़िक़ारख़ां ने इसे पकड़ कर फ़र्रुख़सियर के हवाले कर दिया फ़र्रुख़सियर ने दोनों की जान ली और आप तख़्त पर बैठा। १७१३ ई० فرخ سیر

फ़र्रुख़सियर

फ़र्रुख़सियर ने राजा अजीतसिंह जोधपुरवाले की लड़की के साथ शादी की। बड़ी धूम धाम से की।

सिक्खों ने फिर सिर उठाया। लेकिन बादशाही फ़ौज ने उन्हें फिर आ दबाया। बहुतों को काटा मारा। और उन के सर्दार बंदेगुरु को ७४० आदमियों के साथ पकड़ कर दिल्ली भेज दिया।

और तो सब भेड़ की खाल पहना कर ऊंटों पर सारे शहर में घुमाये गये और फिर सात दिन तक क़त्ल होते रहे लेकिन बंदे को ताश का जामा पहना कर लोहे के पिंजरे में बंद किया। उस के गिर्द भालों पर उस के साथियों के सिर थे एक बिल्ली उस ने पाली थी उसे भी मार कर एक भाले से लटका दिया। जल्लाद नंगी तलवार लिये साम्हने खड़ा था। उस के बालक लड़के को उसे दे कर कहा कि तू ही अपने हाथ से मारडाल और जब उस ने इन्कार किया तो जल्लाद ने उसी के साम्हने उस बेचारे बे गुनाह बच्चे को ज़िबह कर के उस का कलेजा उस के बाप के ऊपर फेंका और फिर गर्म चिमटों से नोच नोच कर उसे भी टुकड़ा टुकड़ा कर डाला। यह सब सिक्ख बड़ी जवांमर्दी से मरे। और अपने मज़्हब से ज़रा न डिगे।

फ़र्रुख़सियर को बादशाह होने के पहले इलाहाबाद के सूबेदार सय्यद अबदुल्लाह और बिहार के सूबेदार सय्यद हुसेनअली इन दोनों भाइयों से बहुत मदद मिली थी इसी लिये पहले को वज़ीर और दूसरे को अमीरुलउमरा मुक़र्रर किया। लेकिन दिलों में फ़र्क़ पड़ गया। बादशाह को उन की तरफ़ से खटका था और उन को बादशाह की तरफ़ से न बादशाह में इतनी अक़्ल थी कि उन्हें अपना ख़ैरख़ाह बना लेता। और न इतनी जुरअत कि उन्हें दूर करदेता। निदान
१७१९ ई० इन सय्यदों ने फ़र्रुख़सियर की जान ली और जब रफ़ीउद्दर्जात
(رفیع الدرجات) और रफ़ीउद्दौला दोनों शाहज़ादे जिन को उन्हों ने तख़्त पर
(رفیع الدولہ) बिठाया था चार ही चार महीने के अंदर इस दुन्या से उठगये तो उन्हों ने रोशनअख़्तर नाम औरंगज़ेब के एक पोते को तलाश कर के तख़्त पर बिठाया जहांदारशाह और फ़र्रुख़सियर ने इतने शाहज़ादों को क़त्ल करडाला था कि सिर्फ़ महलों में जो छिपे छिपाये बच रहे थे। वे ही ज़रूरत के वक़्त तलाश कर के निकाले जाते थे।

मुहम्मदशाह

रौशनअख़्तर ने तख़्त पर बैठ कर अपना लक़ब मुहम्मदशाह रक्खा * लेकिन इन सय्यदों से वह भी बेज़ार था। कठपुतली की तरह कब कोई आदमी किसी दूसरे के हाथ में रहना पसंद करता है पर उन से छुटकारा पाने की कोई सूरत नहीं देखता था। सय्यदों के दुश्मनों ने जो बादशाह की मर्ज़ी मालूम की आपस में उन के मारडालने का मश्वरा किया चीन्क़िलीचख़ां आसिफ़जाह जिस का बाप ग़ाज़िउद्दीन औरंगज़ेब के नामी तूरानी सर्दारों में था। और जिस की औलाद में अब तक हैदराबाद की नव्वाबी चली आती है दखन में बादशाह तो नाम का था इन सय्यदों से बिगड़ गया था। इसी लिये हुसैनअली बादशाह को ले कर फ़ौज समेत दखन को रवाना हुआ। और अबदुल्लाह को दिल्ली में छोड़ा। पर रास्ते में एक क़लमाक़ † ने अर्ज़ी देने के बहाने पालकी के पास आ कर उसे ऐसा एक ख़ंजर मारा। कि वह लोथ होकर बाहर गिर पड़ा। मुहम्मदशाह दिल्ली को मुड़ा। अबदुल्लाह ने निकल कर मुक़ाबला किया। राजा चूड़ामन जाट उस के साथ था। पकड़ा गया। आसिफ़जाह को बादशाह ने वज़ीर किया। लेकिन जिस ने औरंगज़ेब का दर्बार देखा था भला वह मुहम्मदशाह से ऐय्याश बादशाह के पास कब ठहर सकता था। मुहर तो मुहम्मदशाह की महलों में रहती थी और छोकरे मुसाहिबी करते थे दिन रात ऐश से काम था। बादशाही का तो ख़ाली एक नाम था। विज़ारत से इस्तीफ़ा देकर दखन को अपनी हुकूमत पर चला गया। नज़राना हमेशा भेजता रहा लेकिन और किसी बात में दिल्ली के दर्बार से कुछ इलाक़ा न रक्खा। मरहटों का ज़ोर इस अर्से में बहुत बढ़ गया था। नर्मदा तक उन्हीं का डंका बजता था। साहु ने बालाजी

---

* تاریخ جلوس محمد شاہ سریر آرائے جاہ دولت سنہ ۱۱۳۱ ہجری

† तातार की एक क़ौम का नाम है॥

विश्वासनाथ को जो कोकन में किसी गांव का पुश्तैनी पटवारी था पेशवा बनाया। उस का बेटा बाजीराव * पेशवा बड़ा हौसिलेवाला हुआ। उस ने देखा कि दिल्ली की सल्तनत में अब कुछ दम बाक़ी न रहा। और मरहटों को बे लूट मार चैन पड़ना या सिपहगरी में दुरुस्त रहना कठिन होगा। फ़ौज को नर्मदा पार उतार दिया। और मालवा बुंदेलखंड लूटता पाटता ऐन दिल्ली के दर्वाज़े पर डेरा आडाला। पर दिल्ली लेनी या बादशाह को छेड़ना उसे मंज़ूर न था। और उधर से आसिफ़जाह ने भी दिल्ली की तरफ़ कूच किया था। निदान बाजीराव फिर दखन की तरफ़ मुड़गया। मुल्क पर चम्बल तक अपना क़ब्ज़ा रक्खा। मल्हारराव हुल्कर और रानाजी सेंधिया दोनों उस के तहत में बड़ी बड़ी फ़ौजों पर हुक्म चलाते थे। और भारी भारी मुहिम्में सर करते थे। कहते हैं कि मल्हारराव हुल्कर गड़रिये का लड़का था और किसी वक़्त में भेड़ बकरियां चराता था। और सेंधिया भी पहले ख़िद्मतगारों में नौकर रहा था।

नादिरशाह कौन था और किस तरह ईरान का बादशाह हुआ यह ईरान के इतिहास से इलाक़ा रखता है यहां हम को इतना ही लिखना चाहिये कि कुछ क़ंधारी अफ़ग़ान उस से फिरकर काबुल की तरफ़ चले आये थे और जब उस ने उन की गिरफ़्तारी के लिये मुहम्मदशाह को लिखा तो यहां से कुछ भी जवाब न गया। और फिर ताकीद के लिये जब उसने दूसरा हरकारा रवाना किया तो वह पहाड़ों में अफ़ग़ानों के हाथ से मारा गया। इसी पर ख़फ़ा होकर उस ने हिंदुस्तान पर चढ़ाई कर दी। असल बात यह है कि अगर कोई सोने की खान बे मालिक और बे पहरे चौकी पड़ी हो तो वह कौन है जिस का जी और उस पर हाथ डालने को न चाहे? जब दिल्ली में ख़बर पहुंची कि नादिरशाह वहां के हाकिमों को शिकस्त देता सिन्धु नदी

* यह बाजीराव वह नहीं है जो बिठूर में मरा।

पार उतर आया और जैसे कोई बाज़ बटेर पर गिरता है चढ़ा ही चला आता है बड़ी घबराहट पड़ गयी। मुहम्मदशाह का हाल वाजिदअलीशाह लखनऊ के बादशाह से भी जो मुल्क खोकर कलकत्ते में तशरीफ़ रखते हैं बदतर था। हमारे पास उस वक़्त के एक मेले की तसवीर मौजूद है उसी को देखना मुहम्मदशाह का सारा ज़माना देख लेना है वह उस मेले की तसवीर है जो मुहम्मदशाह ने महादेव का किया था वाजिदअलीशाह के जोगी जोगन वाले मेले का भला उस के सामहने क्या हक़ था। उस में नंगे मर्द और नंगी औरतें इस तरह पर बनायी हैं कि हर्गिज़ बयान नहीं कर सकते शर्म दामनगीर है निदान जो कुछ टूटी फूटी सड़ी गली फ़ौज बहम पहुंची इकट्ठा करके करनाल पहुंचा। आसिफ़जाह और सआदतख़ां दोनों साथ थे सआदतख़ां पहले तो ख़ुरासान का एक सौदागर था लेकिन अब सर्दारी करता था। लखनऊ के बादशाह इसी की बेटी की औलाद में हैं करनाल में नादिर-शाह से लड़ाई हुई भला कहां नादिरशाह के मंझे हुए जर्रार सिपाही और कहां मुहम्मदशाह की गुड़ियां मरघटों से तो कुछ बस चलता ही न था। नादिरशाह से कब खेत हाथ लगता था। शिकस्त आयी। इलाज कुछ बाक़ी न रहा सर्दारों समेत नादिरशाह के पास आ कर हाज़िर हुआ नादिरशाह ने बड़ी इज़्ज़त और ख़ातिरदारी की। दोनों बादशाह मिल कर दिल्ली के क़िले में दाख़िल हुए। और उसी में एक साथ रहने लगे। पर दूसरे ही दिन शहरवालों ने अफ़वाह उड़ा दिया कि नादिरशाह मर गया। और बदमआशों ने उस के साथवालों को जो शहर में थे क़तल करना शुरू किया। नादिरशाह ने बहुतेरा चाहा कि बलवा दब जावे। और ख़ूनरेज़ी न होने पावे। बल्कि सुबह होते ही ख़ुद घोड़े पर सवार होकर निकला। और लोगों को फ़हमाइश करने लगा। लेकिन जब हर गली कूचे में अपने सिपाहियों की लाशें पड़ी हुई देखीं और हर तरफ़ से पत्थर और ढेले ख़ुद उस पर पड़ने लगे

ख़ून जोश में आया। घोड़े से उतर कर रोशनुद्दौला वाली सुनहरी मसजिद में बैठ गया और क़तल आम * का हुक्म दिया॥ दो पहर से ऊपर क़तल हुई। और लाख से ऊपर आदमी मारे गये कई जगह आग भी लग गयी †॥ आख़िर मुहम्मदशाह अपने वज़ीरों समेत साम्हने आकर खड़ा हुआ। और जब नादिरशाह ने बोलने की इजाज़त दी तो मुहम्मदशाह रोपड़ा॥ नादिरशाह ने उसी दम क़तल की मौक़ूफ़ी का हुक्म दिया लेकिन वाह रे हुक्म इस ज़ालिम का कि अगर किसी ने किसी की गर्दन पर काटने को तलवार रक्खी थी और मौक़ूफ़ी यानी अमान के हुक्म की मुनादी कान में पहुंच गयी। तुर्त उठा ली॥

नादिरशाह को हिंदुस्तान में ख़ाली दौलत का लालच लाया था। उसे मान दर्कार था मुल्क से कुछ भी सरोकार न था॥ जो कुछ नक़द जवाहिर माल असबाब बादशाही ख़ज़ाने में मौजूद था और जहां तक सर्दार और शहरवालों से हाथ लग सका ले लिवाकर अट्ठावन दिन रहने के बाद दिल्ली से फिर अपने मुल्क की तरफ़ चला गया। कहते हैं कि उस को यहां सत्तर करोड़ से ऊपर इस लूट का माल हाथ लगा सात करोड़ का तो निरा एक तख़्त ताऊस था॥ नादिरशाह ने लोगों से रुपया लेने में बड़ी ज़ियादती की बड़े बड़े इज़्ज़तदारों को कोड़ों से पिटवाया। बहुतेरों ने इस ख़ौफ़ से ज़हर खा लिया॥

निदान सिंधुनदी पार तो नादिरशाह ने सब इलाक़ों पर अपना क़ब्ज़ा रक्खा। और सिंधुवार का मुल्क मुहम्मदशाह को छोड़ दिया॥

एक तवारीख़वाला यह भी लिखता है कि नादिरशाह को हिंदुस्तान में आसिफ़जाह और सआदतख़ां ने मिलकर बुलाया था। और इन्हीं की दग़ाबाज़ी से मुहम्मदशाह ने शिकस्त खायी लेकिन इस का कुछ पक्का सुबूत नहीं मिलता॥

---

* تاریخ نادرشاهی دلی خراب شد سنه ۱۱۵۱ هجری

† इस ग्रंथकर्ता के परदादा बाबा डालचंद के दो भाई इसी नादिरशाही में मारे गये॥

कुछ दिनों पीछे जब नादिरशाह अपने मुल्क में क़ल्बाश-
इयों के हाथ से मारा गया *। उस के सर्दारों में से अहमदख़ां
अबदाली जिसे लोग अब अहमदशाह दुर्रानी कहते हैं क़ंदहार
का बादशाह बन बैठा। और बलख़ सिंध कश्मीर पर अमर
न करके हरा हिंदुस्तान की जानिब फिरा और लाहौर लेता १७४७ ई०
हुआ सर्हिंद में आ दाख़िल हुआ। लेकिन वहां बादशाही फ़ौज
से शिकस्त खाकर पंजाब के सूबेदार से कुछ ख़राज ठहराता
हुआ अपने वतन को मुड़गया।

थोड़े ही दिनों बाद मुहम्मदशाह इस दुन्या से सिधारा †। १७४८ ई०
और उस का वलीअहद अहमदशाह तख़्त पर बैठा।

अहमदशाह

احمدشاه

इस ने सआदतख़ां के दामाद सफ़दरजंग को वज़ीर बनाया
लेकिन सफ़दरजंग की आसिफ़जाह के पोते ग़ाज़िउद्दीन से लाग
पड़ गयी और दर्बार के सब लोग ग़ाज़िउद्दीन की तरफ़ से
नित दिल्ली के गली कूचों में तर्फ़ैन के आदमियों से दंगा फ़साद
होने लगा और ख़ानेजंगी का बाज़ार ख़ूब ही गर्म हुआ। इस
सबब से सफ़दरजंग विज़ारत से इस्तीफ़ा दे कर अवध की
तरफ़ अपनी सूबेदारी पर चला गया। लेकिन बादशाह की
मौज़ां ग़ाज़िउद्दीन से भी नहीं पटी जब वह जाटों के क़िले
भरतपुर और डीग से लड़ रहा था बादशाह शिकार के बहाने
उस पर फ़ौज लेकर चढ़ा। ग़ाज़िउद्दीन ने बीच ही में बादशाह
को पकड़वाकर मा समेत उस की आंखें निकलवा लीं और
जहांदारशाह के बेटे को तख़्त पर बिठलाकर उस का लक़ब १७५४ ई०
आलमगीरसानी रख दिया।

आलमगीरसानी

عالمگیر ثانی

इस बादशाह के तख़्त पर बैठने के थोड़े ही दिनों बाद
ग़ाज़िउद्दीन उस सूबेदार की मदद से जो अहमदशाह दुर्रानी

* تاریخ وفات نادرشاه في النار والسقر معه جد والدو سنه ۱۱۶۰ هجری

† इस ग्रंथकर्ता के परदादा के चचेरे भाई फ़तहचन्द को इसी ने
जगतसेठी का ख़िताब दिया था।

की तरफ़ से पंजाब में था शादी करने के बहाने से लाहौर में घुस गया। और उस की मा को अपने लश्कर में क़ैद कर लाया॥ अहमदशाह दुर्रानी इस ख़बर को सुनते ही आग
१७५६ ई० बगूला बन गया। और फ़ौरन् अपनी फ़ौज लेकर हिंदुस्तान पर चढ़ दौड़ा और सीधा दिल्ली चला आया॥ ग़ाज़िउद्दीन ने इस अर्से में सूबेदार की मा को भी छोड़ दिया। और ख़ुद भी अहमदशाह दुर्रानी के हुज़ूर में हाज़िर हुआ॥ लेकिन वे कुछ लिये यह कब फिरता था उस ने लोगों से रुपया वसूल करने में नादिरशाह से भी ज़ियादा सख़्ती और ज़ियादती की उधर शुजाउद्दौला से रुपया वसूल करने को उस पर फ़ौज भेजी इधर जाटों से रुपया वसूल करने को आप चढ़ा। पहले बल्लभगढ़ वालों को क़त्ल किया फिर मथुरा में क़त्लआम किया दिन मेले का था बेचारे बहुतेरे यात्री मर्द औरत लड़के बाले बेगुनाह काटे गये मौसिम गर्मियों का आगया था इसी लिये जो कुछ हाथ लगा ले लिवाकर फिर अपने वतन को चलता हुआ॥ चलते वक़्त बादशाह ने उस से यह कहा कि आप मुझ को ग़ाज़िउद्दीन के हाथ में न छोड़ जाइये इस लिये वह नजीबुद्दौला रुहेले को अपनी तरफ़ से सिपहसालार मुक़र्रर कर गया। जब ग़ाज़िउद्दीन बेक़ाबू हुआ उस ने अपनी मदद के लिये मरहटों को बुलाया॥ बाजीराव के तीन बेटे थे। बालाजीराव रघुनाथराव और एक मुसलमानी के पेट से शमशेर बहादुर बाजीराव के मरने पर बालाजीराव पेशवा हुआ और शमशेर बहादुर के हाथ में बिल्कुल बुंदेलखंड रहा बांदे के नव्वाब इसी शमशेर बहादुर की औलाद में हुए॥

परसूजी भोंसला सितारे के गिर्देनवाह का रहनेवाला पहले तो सवारों में नौकरी करता था। लेकिन साहू ने दर्जा बढ़ा कर उसे बराड़ का हाकिम बना दिया अब उस का चचेरा भाई रघुजी उसकी जगह पर बैठ कर पेशवा से ख़िराज खाता था॥ जब रघुजी ने अपने मंत्री भास्कर पंडित को बंगाला लूटने के लिये भेजा। बादशाही अहलकारों ने क़ाबू अपना न देख कर

पेशवा को उस के मुक़ाबले के लिये उभारा। यह फ़ौरन मुर्शिदाबाद पहुंचा। और उस वक़्त तो जो कुछ क़रार हुआ था लेकर १७४२ ई०
बंगाला भास्कर से बचा दिया। लेकिन जब दूसरी दफ़ा भास्कर ने बंगाले में लूट मार मचायी। और पेशवा से कुछ मदद न पायी। सूबेदार ने फ़रेब देकर भास्कर को मुलाक़ात के लिये बुलाया। और मुलाक़ात के वक़्त उस का काम ही तमाम कर डाला। पर आख़िर रघुजी को कटक का इलाक़ा दे कर बंगाले की आमदनी से भी चौथ के नाम से कुछ सालाना मुक़र्रर करना पड़ा। निदान इधर भी समुद्र तक मरहटों का क़दम आ गया।

साहू के औलाद मरा राजाराम की बेवा औरत ताराबाई १७४९ ई०
अब तक जीती थी बालाजीराव ने अपना मतलब गांठने के लिये उस से कहला दिया कि मैं ने एक आप का पोता रामराजा छुपा रक्खा है और साहू से मरते वक़्त एक काग़ज़ लिखवा लिया कि नाम को तो राज सेवाजी के ख़ानदान में रहे। पर काम बिल्कुल राज का पेशवा करे। निदान रामराजा सितारे में रहा। और पेशवा का दर्बार पूना में जमा।

ग़ाज़िउद्दीन की मदद के लिये पेशवा का भाई रघुनाथराव आया। महीने भर तक दिल्ली का क़िला घिरा रहा। बादशाह ने अपने वलीअहद आलीगुहर को तो जान बचाने के लिये पहले से किसी तरफ़ को भेज दिया था अब नजीबुद्दौला को भी भागना पड़ा। बादशाह ने क़िले का दर्वाज़ा खुलवा दिया ग़ाज़िउद्दीन को फिर विज़ारत का इख़्तियार मिला।

अहमदशाह दुर्रानी अपने लड़के तैमूरशाह को पंजाब में छोड़ गया था अब रघुनाथराव ने दिल्ली से फ़ुर्सत पायी क़ाबू ग़नीमत समझकर पंजाब पर भी क़ब्ज़ा किया और मरहटों का निशान कटक से अटक तक पहुंचा दिया। हिमालय से समुद्र तक इन्हीं का डंका बजता था। और सारे हिंदुस्तान पर इन्हीं का हुक्म चलता था। वो था इन्हीं की ख़ुशामद करता था। और जो आफ़त में पड़ता था इन्हीं से मदद मांगता था।

रघुनाथराव ने किसी मरहटे को पंजाब की हुकूमत पर छोड़
१७५८ ई० कर दक्षन को चला गया। और अहमदशाह दुर्रानी ने यह
ख़बर सुन कर फिर हिंदुस्तान पर चढ़ाव किया। मरहटे उस
के सिंधुनदी पार उतरते ही पंजाब छोड़ भागे और वह फ़राग़त
१७५९ ई० से अपनी फ़ौज लिये सहारनपुर के सामने जमना आ उतरा।
ग़ाज़िउद्दीन ने उसी दम बादशाह के मार डालने का हुक्म दिया
और आप जाटों की ज़मींदारी में चलागया। ग़ाज़िउद्दीन के आद-
मियों ने बादशाह को छुरियों से मारकर जमना की रेत में डाल
दिया। बदमाशों ने वहां उस का कपड़ा तक उतार लिया।

पेशवा को जब यह हाल मालूम हुआ बड़ी धूमधाम का
लश्कर अहमदशाह दुर्रानी के मुक़ाबले को रवाना किया उस
का चचेरा भाई सदाशिवराव भाऊ इस लश्कर का सर्दार था।
और उस का बेटा विश्वासराव भी साथ था। रास्ते में बहुत
सी फ़ौजें रजपूतों की आ मिली थीं और चूरामन की औलाद
में राजा सूरजमल के साथ तीस हज़ार जाट भी शामिल थे
इस बुड्ढे ने भाऊ को सलाह दी कि आप असबाब और तोपख़ाना
भेटल सिपाहियों के साथ मेरे क़िले में रख दीजिये। और ख़ाली
सवारों से अपनी क़ौम के दस्तूर बमूजिब दुश्मन को तंग
कीजिये। भाऊ घमंड में डूबा था इस नेक सलाह पर कुछ
भी ख़याल न किया। सूरजमल * थोड़े ही दिनों बाद दिल्ली
के डेरों से जुदा हो कर अपने इलाक़े को चल दिया।

अहमदशाह दुर्रानी अनूपशहर में छावनी डाले हुए था।
दिल्ली में कुछ थोड़े से सिपाही छोड़ रक्खे थे उन से मरहटों
का मुक़ाबला न हो सका। भाऊ ने वहां बहुत ज़ियादती की।
दीवानख़ास में जो चांदी की छत लगी थी बिलकुल उखाड़ली।
मस्जिद और मक़बरों को भी लूट पाट और तोड़ फोड़ से बाक़ी न
छोड़ा। वह तो विश्वासराव को तख़्त पर बैठाना चाहता था
लेकिन फिर सलाह यही ठहरी कि अहमदशाह दुर्रानी का
काम तमाम हो लेने दो। भाऊ दिल्ली से कुंजपुरे की तरफ़ गया।

* भरतपुर के राजा इसी की औलाद में हैं।

अहमदशाह दुर्रानी ने भी अनूपशहर से कूच किया भाऊ ने अपने मोरचे पानीपत में क़ायम किये सत्तर हज़ार तो इस के साथ सवार थे और दो सौ तोप बहीर समेत मोरचों के अंदर तीन लाख आदमी से हर्गिज़ कम न थे। इस में नौ हज़ार आदमी इब्राहीमख़ां गारदी के तहत में पल्टन के सिपाही। अंगरेज़ों की देखादेखी अब यहां वाले भी पल्टन रखने लगे थे। अहमदशाह दुर्रानी के साथ तिरपन हज़ार सवार और अड़तीस हज़ार पैदल सिपाही थे॥ लेकिन तोपें तीस ही थीं इस ने भी मोरचे क़ायम किये रसद की दोनों तरफ़ तकलीफ़ थी। छेड़छाड़ हमेशा आपस में चली जाती थी। पर यह जिगरा किसी का न होता था कि एक दूसरे के मोरचों पर हल्ला कर दे हिंदुस्तानी रईसों ने जो अहमदशाह दुर्रानी की तरफ़ थे उस से बहुत कहा कि आप हल्ला कर दीजिये। लेकिन उसने यही जवाब दिया कि यह मुआमला लड़ाई का है आप लोग इस से नामहरम हैं और बात में जो चाहिये सो कीजिये। लेकिन इस को मेरे भरोसे पर छोड़ दीजिये। सच है तबले सारंगी का मुआमला होता तो ये महरम होते लड़ाई का भेद दिल्ली लखनऊवाले क्या जानें उस ने एक छोटा सा लाल ख़ेमा अपने मोरचों के आगे खड़ा कर रक्खा था। उसी में सुबह को नमाज़ पढ़ने के लिये और शाम को खाना खाने के लिये आता था बाक़ी दिनभर घोड़े पर सवार फ़ौज में घूमा करता था। हिंदुस्तानी रईसों से कहता कि आप मज़े से पैर फैलाकर सोइये अगर आप का बाल भी बांका हो तो मेरा ज़िम्मा लेकिन तारीफ़ है इस बात की कि उस का हुक्म उस के लश्कर में बिधाता के लेख की तरह माना जाता था मक़दूर क्या कि वह हुक्म दे। और फिर कोई बे उसे किये सांस लेसके। शुजाउद्दौला अहमदशाह दुर्रानी की तरफ़ था। उसी की मारिफ़त भाऊ ने सुलह का पयाम भेजा था॥ लेकिन अहमदशाह दुर्रानी ने यही जवाब दिया कि मैं तो मदद को आया हूं सिर्फ़ लड़ने का मालिक हूं सुलह करने के मालिक

हिंदुस्तानी रईस हैं हिंदुस्तानी रईसों की मदद की कि मुल्क हो जावे लेकिन नजीबुद्दौला ने नहीं माना उस ने यही कहा कि अगर ये मरहटों का ज़ोर तोड़े अहमदशाह दुर्रानी चला जावेगा। तो फिर हम सब का कहीं पता भी न लगेगा। उधर मरहटों ने भाऊ का डेरा घेरा। और वावैला मचाया। कि भूखे मरने से तो लड़ कर मरना बिहतर है भाऊ को वादा करना पड़ा कि कल सुबह को ज़रूर लड़ूंगा सब ने पीठ न दिखाने की क़सम खायी और बीड़ा ले ले कर रुख़सत हुये भाऊ ने फिर शुजाउद्दौला को लिखा। कि अब पियाला पुर होगया। बूंद भर भी समाने की जगह नहीं जो करना है झट पट करो। नहीं तो यही आख़िरी पयाम समझो। शुजाउद्दौला का मुंशी पहर रात रहे इस ख़त को पढ़ कर सुना ही रहा था कि मुख़बिरों ने मरहटों के तय्यार होने की ख़बर दी शुजाउद्दौला ने उसी वक़्त जाकर अहमदशाह दुर्रानी को जगाया। वह डेरे में से तय्यार निकला। उसी दम घोड़े पर सवार होकर दुश्मन की तरफ़ चला। और फ़ौज को साथ आने का हुक्म दिया। जब अंधेरा दूर हुआ देखा कि मरहटों की सारी फ़ौज तोपख़ाना आगे किये हुये झंडे उड़ाती डंके बजाती हर हर पुकारती जमे क़दमों समुद्र की तरह उमड़ी चली आती है लेकिन तोपें जो उन की छूटती हैं गोले बिल्कुल अफ़ग़ानों के सिर पर से पार चले जाते थे। लगते किसी को भी नहीं थे। आख़िर इब्राहीमख़ां गारदी ने झुक के भाऊ को सलाम किया और कहा कि आप हमेशा जब में अपने सिपाहियों की तनख़ाह का तक़ाज़ा करता था बुरा मानते थे लेकिन अब आज इन का तमाशा देखिये और यह कहके झंडा हाथ में ले लिया। और अपने सिपाहियों के हुक्म दिया। कि बंदूकें बंद करें। और संगीनों से दुश्मन पर हल्ला करदें। रुहेलों को इन से बहुत नुक़्सान पहुंचा। ठहर न सके उन के हटने से अहमदशाह दुर्रानी का वज़ीर सामने पड़गया। और उधर से भाऊ और विश्वासराव ने भी चुने हुये आदमी लेकर उस पर हल्ला किया। वज़ीर का भतीजा असादख़ां उस के बराबर ही

भाग गया। और साथी भी भागने लगे थे लेकिन वह घोड़े से नीचे उतर पड़ा। और इस बात पर जी से मुस्तइद होगया। कि मरजाना। लेकिन मैदान नहीं छोड़ना। निदान वज़ीर के मारे जाने में कुछ बाक़ी न रहा था कि इसी अर्से में अहमदशाह दुर्रानी कुछ ताज़ी फ़ौज ले कर उस तरफ़ आगया। इस सबब से लड़ाई थम गयी पर तो भी ग़लबा मरहटों की जानिब था। यहां तक कि उस ने अपनी फ़ौज को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। और साथ ही यह भी कह दिया। कि जो जिसे भागते देखे। तुर्त उस का सिर काट डाले। और कुछ किसी क़दर सिपाह जो बायें बाज़ू पर थी उसे मोड़ कर बग़ल से मरहटों पर भेजी। इस हिकमत ने काम कर दिया भाऊ और विश्वासराव लड़ते ही रहे फ़ौज सारी अपना होगयी। मैदान में मुर्दों के ढेर अलबत्ता दिखायी देते थे। अफ़ग़ानों ने दस कोस तक मरहटों का पीछा किया ज़मींदार भी मरहटों को जान नहीं छोड़ते थे। और जो जीते हाथ लगते थे। ज़िबह किये जाते थे। बाईस हज़ार लौंडी ग़ुलाम बनाये गये। अक्सर उन में सर्दार और दर्जेवाले थे। इब्राहीमख़ां गारदी क़ैद में मरा। कहते हैं कि उस के ज़ख़्मों में ज़हर भर दिया था। विश्वासराव की तो लाश मिल गयी पर भाऊ की लाश में शुबहा रहा। इस में शक नहीं कि सब मिल कर दो लाख आदमी से ऊपर इस लड़ाई में मारे गये महादाजी* सेंधिया जिस ने ग्वालियर की रियासत क़ायम की जनम को लंगड़ा हुआ। मल्हारराव हुलकर जिस के घराने में इंदौर की रियासत चली आती है लड़ाई के शुरू ही में भाग के बचा। इस से बढ़ कर कभी किसी फ़ौज को शिकस्त नहीं मिली और इस से बढ़ कर किसी शिकस्त के सबब मातम भी नहीं फैला। सारे दखन में गोया स्यापा बैठ गया। इस धक्के से फिर मरहटों का ज़ोर कभी नहीं पूरा उभरने पाया। अहमदशाह दुर्रानी ने इस फ़तह से कुछ फ़ाइदा नहीं उठाया। अपने वतन की तरफ़ चला गया।

---

* बाजे इस को मह्दाजी भी कहते हैं।

और फिर कभी हिंदुस्तान का कुछ ख़याल नहीं किया शुजा-उद्दौला ने आलमगीरसानी के लड़के आलीगुहर को बंगाले से बुलाकर तख़्त पर बिठाया * ॥

شاهعالم शाहआलम

१७६१ ई० इस ने अपना लक़ब शाहआलम रक्खा । दिल्ली का आख़िरी मुसल्मान बादशाह हुआ ॥ आठ दस बरस इस ने इलाहाबाद की तरफ़ काटे । दिल्लीवाले नजीबुद्दौला की हुकूमत में रहे ॥ जब नजीबुद्दौला मर गया । बादशाह मरहटों की मदद ले कर दिल्ली में दाख़िल हुआ ॥ थोड़े ही दिन नजफ़ख़ां की

१७८८ ई० मुख़्तारी में चैन से कटे थे । कि नजीबुद्दौला के पोते गुलामक़ादिर ने जिस के बाप को नजफ़ख़ां ने बिगाड़ा था अपने रुहेले क़िले के दर्वाज़े पर ला जमाये ॥ बादशाह को ज़मीन पर पटक कर छाती पर चढ़ बैठा । और उसकी आंखें कटार से निकाल कर बाहर फेंक दीं फिर क़िले को ख़ूब लूटा ॥ बाक़ी कुछ न छोड़ा । बेगमों के बदन से कपड़ा तक उतरवा लिया ॥

निदान इस वारिदात की ख़बर जब महाजी सेंधिया को पहुंची फ़ौरन दिल्ली पर चढ़ आया । और गुलामक़ादिर को पकड़ कर बड़ी बुरी हालत से मारा † ॥ जैसा उस ने किया था । वैसा ही फल पाया ॥ सेंधिया ने बादशाह को हर देगी चमचा समझकर क़िले में बंद किया । और बाहर सब अपना क़ब्ज़ा रक्खा ॥ बादशाह बेचारा भूखों मरता था । रअय्यत का हाल भी परेशां था

१८०३ ई० ॥ कि इसी अर्से में लार्ड लेक अंगरेज़ी फ़ौज लेकर यहां पहुंच गया बादशाह को पिंशन मुक़र्रर कर दी वह चैन से अपने दिन काटने लगा । अंगरेज़ों का मुफ़स्सल हाल दूसरे हिस्से में लिखा जायगा ॥

---

* تاریخ جلوس شاه‌عالم فضل ربانی سنه ۱۱۷۳ هجری
تاریخ فوت شاه‌عالم از غریقا سنه ۱۲۲۱ هجری

† नाक कान और हाथ पैर काट कर और आंखें फोड़ कर गुलाम-क़ादिर को एक लोहे के पिंजरे में बंद किया और वह उसी में थोड़ी देर बाद तड़प तड़प कर मर गया ॥

॥ इति ॥

फ़िहरिस्त दिल्ली के मुसल्मान बादशाहों की

नम्बर	पूरा नाम	मशहूर नाम	जुलूस सन् ईसवी	मौत से मरा या मारा गया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
१	कुतबुद्दीन ऐबक ..	कुतबुद्दीन ..	१२०६	घोड़े से गिर कर मरा	१२१०	शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी का ग़ुलाम था इसी ने मुसल्मानों की सल्तनत की जड़ जमायी।
२	आरामशाह	"	१२१०	....	..	नम्बर १ का बेटा था एक साल के अंदर तख़्त से उतारा गया।
३	शम्सुद्दीन अल्तिमश	अल्तिमश ..	१२१०	मौत से मरा	१२३६	नम्बर १ का ग़ुलाम और दामाद था नामी बादशाह हुआ कुतबमीनार बनाया चंगेज़ख़ां की चढ़ाई हुई।
४	रुक्नुद्दीन फ़ीरोज़शाह	रुक्नुद्दीन ..	१२३६	....	•	नम्बर ३ का बेटा था सात ही महीने में तख़्त से उतारा गया बड़ा अय्याश और ग़ाफ़िल था।
५	रज़ीया सुल्तान बेगम	रज़ीया ..	१२३६	मारी गयी ..	१२३९	नम्बर ३ की बेटी थी औरत यही यहां तख़्त पर बैठी होशियार थी।
६	मुइज़्ज़ुद्दीन बहराम ..	बहरामशाह	१२३९	क़ैद में मरा	१२४१	नम्बर ३ का बेटा था।

नम्बर	पूरा नाम	मशहूर नाम	जुलूस सन् ईसवी	मौत से मरा या मारा गया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
७	अलाउद्दीन मसऊद ..	मसऊदशाह	१२४१	मारा गया ..	१२४६	नम्बर ४ का बेटा था बुरा बादशाह था ॥
८	नासिरुद्दीन महमूद..	"	१२४६	मौत से मरा ..	१२६६	नम्बर ३ का बेटा था निहायत नेक बादशाह था ॥
९	ग़यासुद्दीन बलबन ..	बलबन ..	१२६६	मौत से मरा ..	१२८६	नम्बर ८ का बहनोई और वज़ीर था बड़े दबदबेवाला बादशाह हो गया नेक नाम था दिल्ली बड़ी रौनक़ पर थी ॥
१०	मुइज़्ज़ुद्दीन कैक़ुबाद ..	कैक़ुबाद ..	१२८६	मारा गया ..	१२८८	नम्बर ९ का पोता था ग़ुलामों की सल्तनत का आख़िरी बादशाह हुआ निहायत अय्याश था ॥
११	जलालुद्दीन फ़ीरोज़ .. ख़िल्जी	जलालुद्दीन .. ख़िल्जी	१२८८	मारा गया ..	१२९५	समाने का नाइब नाज़िम पठान सादा और रहम दिल था दखन पर पहला हमला हुआ ॥
१२	अलाउद्दीन ख़िल्जी ..	अलाउद्दीन ..	१२९५	मौत से मरा ..	१३१६	नम्बर ११ का भतीजा था बहुत बड़ा बादशाह हुआ मिज़ाज का सख़्त था ॥

१३	कुतबुद्दीन मुबारक शाह	मुबारक शाह	१३१६	हिंदू गुलाम के हाथ से मारा गया	१३२१	नम्बर १२ का बेटा था निहायत ऐय्याश और बदनाम था दिल्ली में हिंदुओं का कुछ दिनों ज़ोर रहा आख़िरी ख़िलजी बादशाह हुआ ॥
१४	ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ..	"	१३२१	काठ के मकान तले दबकर मरगया	१३२५	पहले पंजाब का सूबेदार था पिछला बादशाह था कैक़ुबाद का बाप कराख़ां अब तक बंगाले में अपने काम पर था ॥
१५	मुहम्मद तुग़लक़ ..	अलग़ख़ां ..	१३२५	मौत से मरा	१३५१	नम्बर १४ का बड़ा बेटा था बड़ा बादशाह बड़ा सख़ी बड़ा ज़ालिम बड़ा बहादुर बड़ा अक़्लमंद बड़ा बेवक़ूफ़ बड़ा आलिम बड़ा झक्की बड़ा पागल था ॥
१६	फ़ीरोज़ तुग़लक़ ..	फ़ीरोज़ शाह	१३५१	मौत से मरा	१३८८	नम्बर १५ का रिश्ते में भाई था बहुत अच्छा नेकनाम बादशाह था बहुत सी इमारतें बनवाईं जमना से नहरें निकालीं ॥

नम्बर	पूरा नाम	मशहूर नाम	जुलूस सन् ईसवी	मौत से मरा या मारा गया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
१७	ग़यासुद्दीन तुग़लक़	(दूसरा) ..	१३८८	मारा गया	१३८९	नम्बर १६ का पोता था।
१८	अबूबक्र तुग़लक़ ..	"	१३८९	क़ैद में मरा	..	नम्बर १६ का पोता था एक साल के अंदर क़ैद हुआ।
१९	नासिरुद्दीन मुहम्मद तुग़लक़	नासिरुद्दीन तुग़लक़	१३९०	मौत से मरा	..	नम्बर १६ का बेटा था।
२०	हुमायूं तुग़लक़ सिकंदर शाह	सिकंदर शाह	..	मौत से मरा	१३९४	नम्बर १९ का बेटा था कुल ४५ दिन बादशाह रहा।
२१	नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक़	महमूद तुग़लक़	१३९४	मौत से मरा	१४१२	नम्बर २० का बेटा था इसके ज़माने में यानी १३९८ ई० में तैमूर आया।
२२	दौलतख़ां लोदी ..	"	१४१२	.. ..	..	१५ महीने बाद तख़्त से उतारा गया।
२३	ख़िज़रख़ां सय्यद ..	"	१४१४	मौत से मरा	१४२१	पंजाब का हाकिम था।
२४	मुइज़्ज़ुद्दीन अबुलफ़तह मुबारक शाह सय्यद	मुबारक शाह सय्यद	१४२१	मारा गया ..	१४३४	नम्बर २३ का बेटा था।
२५	मुहम्मद शाह सय्यद	"	१४३४	मौत से मरा	१४४५	नम्बर २३ का पोता था।

२६	अलाउद्दीन सय्यद ..	"	१४४६	.. ..	..	नम्बर २५ का बेटा था सन् १४५० ई० में दिल्ली की बादशाही बहलूलख़ां लोदी के हवाले करके बदाऊं चला गया बादशाही निरी दिल्ली के गिर्दनवाह में रह गयी थी।
२७	बहलूल ख़ां लोदी ..	बहलूल लोदी	१४५०	मौत से मरा	१४८८	पंजाब का हाकिम था अच्छा बादशाह था अमलदारी बढ़ी पंजाब और जौनपुर शामिल हुआ।
२८	सिकंदर लोदी ..	"	१४८८	मौत से मरा	१५१६	नम्बर २७ का बेटा था बड़ा बादशाह हुआ लेकिन हिंदुओं को बहुत दुख दिया फ़रंगियों का पहला जहाज़ यहां इसी के वक़्त में आया।
२९	इबराहीम लोदी ..	"	१५१६	मारा गया	१५२६	नम्बर २८ का बेटा था बाबर की लड़ाई में मारा गया।
३०	ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	बाबरशाह ..	१५२६	मौत से मरा	१५३०	तैमूर के ख़ानदान में था अंगरेज़ों की अमलदारी तक इसी ख़ानदान

नम्बर	पूरा नाम	मशहूर नाम	जुलूस सन् ईसवी	मौत से मरा या मारा गया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
						मे सल्तनत रही बाबर बहुत अच्छा आदमी और बहुत अच्छा बादशाह था।
२१	हुमायूं शाह ..	"	१५३०	गिर के मरा	१५५५	नम्बर २० का बेटा था शेरशाह ने निकाल दिया था ईरान के बादशाह की मदद लेकर आया और फिर हिंदुस्तान का बादशाह हुआ।
२२	शेरशाह सूर ..	शेरशाह ..	१५४०	कालिंजर के मुहासरे में मेगज़ीन उड़ने से झुलस कर मर गया	१५४५	इसका बाप हसन पठान सहसराम में ५०० घोड़ों का जागीरदार था अच्छे और अकलमंद बादशाहों में गिना जाता है।
२३	सलीमशाह सूर ..	सलीमशाह ..	१५४५	मौत से मरा	१५५३	नम्बर २२ का बेटा था नेकनाम रहा।
२४	मुहम्मदशाह अदली	अदली ..	१५५३	.. ..	..	नम्बर २३ का चचेरा भाई था बड़ा नादान और बदकार था लोग अंधली पुकारते थे।

६७	अबुल्मुज़फ़्फ़रजलालुद्दीन मुहम्मद अक्बर	अक्बर शाह	१५५६	मौत से मरा	१६०१	नम्बर ३१ का बेटा था यहां के मुसल्मान बादशाहों में बेशक सब से अच्छा हुआ बल्कि दुन्या के अच्छे और अक़्लमंद और बड़े और नामी बादशाहों में गिना जाता है।
६८	नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर	जहांगीर शाह	१६०५	मौत से मरा	१६२७	नम्बर ३४ का बेटा था अच्छे बादशाहों में गिना जाता है पर शराब बहुत पीता था और बिल्कुल अपनी बेगम नूरजहां के इख़्तियार में था।
६९	शहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहां	शाहजहां ..	१६२८	क़ैद में मरा	१६६४	नम्बर ३८ का बेटा था सल्तनत को बड़ी रौनक़ दी मुसल्मानों के तहत में हिंदुस्तान ऐसे औज पर न कभी था न उसके बाद फिर हुआ तख़्त ताऊस और ताजगंज का रौज़ा इसी ने बनवाया।
७८	मुहीयुद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर	औरंगज़ेब या आलमगीर ..	१६५९	मौत से मरा	१७०७	नम्बर सैंतीस का तीसरा बेटा था बड़ा कपटी और पाखंडी था

नम्बर	पूरा नाम	मशहूर नाम	जुलूस सन् ईसवी	मौत से मरा या मारा गया	सन् ईसवी	कैफ़ियत
						बादशाही अच्छी कर गया पर तैमूर सल्तनत की जड़ में तेल इसी ने दिया ॥
३९	मुअज़्ज़म बहादुरशाह	बहादुर शाह	१७०७	मौत से मरा ..	१७१२	नम्बर ३८ का बेटा था सिक्खों ने ज़ोर पकड़ा और सरहिंद लूटा फूंका ॥
४०	जहांदारशाह ..	"	१७१२	मारा गया ..	१७१३	नम्बर ३९ का बेटा था ॥
४१	फ़र्रुख़सियर ..	"	१७१३	मारा गया ..	१७१९	नम्बर ४० का भतीजा था कुछ बेअक़्ल सा और जी का बोदा था ॥
४२	मुहम्मदशाह ..	"	१७१९	मौत से मरा ..	१७४८	नम्बर ३९ का पोता था गोया लखनऊ का वाजिदअलीशाह था नादिरशाही हुई सल्तनत बिल्कुल जड़ से हिल गयी ॥
४३	अहमदशाह ..	"	१७४८	आंखें निकाल डाली गयीं	१७५४	नम्बर ४२ का बेटा था नाम का बादशाह था ॥

४४	आलमगीर ..	(दूसरा)	१७५४	मारा गया ..	१७५९	नम्बर ४० का बेटा था मरहटे कटक से अटक तक पहुंचे अहमदशाह दुर्रानी की चढ़ाई हुई॥
४५	शाह आलम ..	”	१७०१	गुलामक़ादिर ने अंधा किया	१८०६	नम्बर ४४ का बेटा था दिल्ली का आख़िरी मुसल्मान बादशाह हुआ अंगरेज़ों ने मरहटों का क़ैद से छुड़ाकर पिंशन मुक़र्रर कर दी॥
..	.. ..	.. ..	..	—	..	(सिवाय इन ऊपर लिखे हुए बादशाहों के बीच और भी दिल्ली के तख़्त पर बैठे क्योंकि कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर शाहआलम तक ६५ गिने जाते हैं पर उन बीसों ने रफ़ीउद्दौलत और रफ़ीउद्दौला की तरह ऐसे थोड़े २ दिनों सल्तनत की कि उनके नामों से इस फ़िहरिस्त का बढ़ाना मुनासिब न जाना)

तफ़्सील बड़े वाक़िओं की

	सन् ई० से पहले
सिकंदर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की	३३१ बरस
विक्रमादित्य गद्दी पर बैठा	५० बरस
	सन् ईसवी
नौशेरवां का लश्कर हिन्दुस्तान में आया	५३० (कुछ दिन पीछे)
वलीद के ज़माने में मुसल्मानों ने यहां बड़ी धूम मचायी	७११
सुबुक्तगीन ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की	९७७
महमूद ग़ज़नवी की पहली चढ़ाई	१००१
सोमनाथ टूटा	१०२४
शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी की पहली चढ़ाई	११९१
पृथीराज को पकड़ लिया और मार डाला	११९३
कुतबुद्दीन सेवक दिल्ली का बादशाह हुआ	१२०६
चंगेज़ख़ां की फ़ौज हिन्दुस्तान की तरफ़ आयी	१२१९
औरत (रज़ीया बेगम) बादशाह हुई	१२३६
सल्तनत गुलामों के ख़ानदान से निकल कर ख़िलजियों के हाथ में आयी ..	१२८८

तफ़सील बड़े वाक़िओं की

दखन पर मुसल्मानों की पहली चढ़ाई हुई ..	१२९४
सल्तनत ख़िल्जियों का ख़ानदान तमाम होने पर तुग़्लक़ों ने लेली ..	१३२१
तैमूर दिल्ली में आया	१३९८
सल्तनत सय्यदों से लोदियों ने ली	१४५०
पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम लोदी को मारकर बाबर दिल्ली के तख़्त पर बैठा	१५२६
सक्के ने चमड़े का सिक्का चलाया	१५३९
अक्बर ने इस दुन्या से कूच किया	१६०५
मरहटों का राज क़ाइम करनेवाला सेवाजी पैदा हुआ	१६२७
दिल्ली में नादिरशाह ने क़तल आम किया	१७३९
पानीपत में अहमदशाह दुर्रानी ने भाऊ को शिकस्त दी	१७६१
दिल्ली के आख़िरी बादशाह शाहआलम को ग़ुलामक़ादिर ने अंधा किया ..	१७८८
लार्ड लेक अंगरेज़ी फ़ौज लेकर दिल्ली पहुंचा शाहआलम को मरहटों की क़ैद से छुड़ाकर पिन्शन मुक़र्रर कर दी	१८०३

इतिहास तिमिरनाशक

दूसरा हिस्सा

आगे अंगरेज़ों को यहां आने के लिये समुद्र का रास्ता मालूम न था जहाज़ी तिजारत यहां से ख़ाली ईरान अरब और मिसर वा चीनवालों के साथ जारी थी यानी ये लोग अपने जहाज़ अरब और बंगाले ही की खाड़ी के अंदर चलाया करते थे। समुद्र को बे हद और अपार समझ कर कभी उन खाड़ियों के बाहर न जाते थे॥ और यह तो कब उन का हियाव हो सकता था कि हिंद के समुद्र से निकल कर अफ़्रीका के पच्छम अटलांटिक समुद्र में पहुंचते। लेकिन जो सब चीज़ें हिंदुस्तान से जहाज़ों पर मिसर और बसरे को जाती थीं और फिर वहां से खशकी और तरी की राह फ़रंगिस्तान में पहुंचती थीं उन की तिजारत में इतना फ़ाइदा उठता था कि फ़रंगिस्तान वाले यहां की सीधी राह पाने के लिये निहायत बेचैन थे और हर तरफ़ से उस की ढूंढ़ खोज कर रहे थे॥ कोई * यह समझ कर कि ज़मीन गोल है हिंदुस्तान आने के लिये अपना जहाज़ सीधा पच्छम को चलाता और अमरिका के किनारे जा अटकता। कोई † यह समझ कर कि पुराने महाद्वीप के चारों तरफ़ समुद्र है किनारे किनारे उत्तर को ले जाता और वहां उत्तर समुद्र के जमे हुए बर्फ़ में फंस रहता॥ और कोई ‡ यह समझ कर कि अफ़्रीका के पूरब हिंदुस्तान है उस के गिर्द घूमने को निकलता पर आधी टूर जाके मारे तूफ़ान के पीछे मुड़ आता। और उस जगह का नाम तूफ़ानी अंतरीप रखता॥ यहां तक कि सन् १४९० में पुर्तगाल के बादशाह इमानुअल ने वास्कोडिगामा को तीन जहाज़ लेकर दक्खन

---

* कोलम्बस्॥ † डच और अंगरेज़॥ ‡ बार्थालेम्यू डिआज़॥

की राह हिंदुस्तान जाने का हुक्म दिया उस ने न कुछ तूफ़ान का ख़याल किया न तूफ़ानी अंतरीप का। चलते चलते ग्यारह महीने के लगभग अर्से में अफ्रीका घूम कर मलाबार के किनारे कल्लीकोट में लंगर आ डाला॥ उस वक़्त वहां के राजा का नाम पुर्तगाल वालों ने शामोरिम् लिखा है वह तो इन की ख़ातिदारी करना चाहता था लेकिन अरब वालों ने डाह खा के उस का दिल इन से फेर दिया। वास्कोडिगामा ने जब यह मालूम किया सुर्त लंगर उठा के चाल अपने मुल्क की तरफ़ उड़ाया॥ दूसरे साल पुर्तगाल के बादशाह ने १३ जहाज़ रवाना किये। और उन पर आठ पादरी और १५०० सिपाही भी भेजे॥ अल्वारिज़् काबरल उन का अफ़सर था। छ जहाज़ इन में से कल्लीकोट पहुंचे राजा इन की भीड़ भाड़ देख कर दबदबे में आ गया॥ जिन हिंदुओं को वास्कोडिगामा जाते वक़्त यहां से पकड़ ले गया था और अब अल्वारिज़् काबरल वापस लाया था उन्हों ने पुर्तगाल का बहुत बढ़ावे के साथ बयान किया। निदान राजा ने पुर्तगाल वालों को कल्लीकोट में कोठी खोलने की परवानगी दी। और फिर धीरे धीरे इन्हों ने और भी जगह कोठी खोलनी शुरू की॥ सन् १५१० में बिजयपुर वालों से गोवा छीन लिया। और तब से वही बराबर उन का यहां दारुल-हुकूमत बना रहा॥

पुर्तगाल वालों की देखा देखी डच और फ़रासीस वाले भी अपने जहाज़ इधर लाने लगे। फिर यह कब हो सकता था कि १५९९ ई० अंगरेज़ चुपचाप बैठे रहते॥ सन् १५९९ में इंगलिस्तान के कुछ आदमियों ने साझा कर के तीस लाख रुपये पूंजी के तौर पर इकट्ठा किये। और उस वक़्त की मलिका क्वीन अलीज़ेबथ से इस मज़मून की एक सनद ले ली कि पंदरह बरस तक वे उन की परवानगी के बिना दूसरा आदमी उन के मुल्क का पूरब में तिजारत न करने पावे॥ साझियों को अंगरेज़ी में कम्पनी कहते हैं इसी लिये इन साझियों का नाम ईस्ट इंडिया कम्पनी * पड़ गया। इन का जत्था

* मशरिक़ी हिंदुस्तान के साझी॥

जो साल में चार बार यानी सिमाहीवार हुआ करता था कोर्ट आफ़ प्रोप्राइटर्स यानी मालिकों की कचहरी कहलाया ॥ उस में जो पांच हज़ार रुपये और उस से ऊपर के हिस्सेदार थे उन्हें राय देने का इख़्तियार था। और आईन क़ानून बनाना और नफ़े का बांटना भी इन्हीं के हाथ था ॥ बाक़ी सब काम के लिये यह अपने दर्मियान से साल के साल चौबीस आदमी कारबारी मुक़र्रर कर देते थे इस चौबीसी का नाम कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स रहा बीस हज़ार से कम का हिस्सेदार डैरेक्टर नहीं हो सकता था। और उन का मीरमजलिस चेयरमैन कहलाता था ॥ हिंदुस्तान में होते होते तीन इहाते हो गये। यानी कलकत्ता बम्बई मंदराज और तीनों में तीन प्रेसिडेंट या गवर्नर अपनी अपनी कौंसल समेत रहने लगे ॥ उस वक़्त मुल्की साहिब लोगों के चार दर्जे थे। पांच बरस तक मुतसद्दी पांच से आठ तक कोठीवाले आठ से ग्यारह तक छोटे सौदागर और ग्यारह बरस हिंदुस्तान में रहने के बाद बड़े सौदागर कहलाते थे इन्हीं बड़े सौदागरों में से पुराने साहिबों को चुन कर कौंसल का मेम्बर बनाते थे ॥

निदान सन् १६०९ में सर हिनरी मिडलटन इस कम्पनी का भेजा हुआ तीन जहाज़ लेकर सूरत में आया लेकिन ख़रीद फ़रोख़्त के बाब में हाकिम से तकरार हो जाने के सबब उस वक़्त वहां कोठी खोलने की परवानगी नहीं मिली। सन् १६१३ में जहांगीर ने इन्हें सूरत घोघा खंभात और अहमदाबाद में और फिर थोड़े ही दिनों बाद शाहजहां ने सिंध और बंगाले में भी कोठियां खोलने की परवानगी दी ॥ महसूल साढ़े तीन रुपया सैकड़ा ठहरा यह उस वक़्त किसके ख़याल में था कि इसी कम्पनी के नौकर उस की औलाद और उस के जानशीन को क़ैद कर के रंगून ले जावेंगे। और सारे हिंदुस्तान में अपना सिक्का चलावेंगे ॥ १६०९ ई० १६१३ ई०

सन् १६३९ में इन्हों ने चंद्रगिरि के राजा से जो विजय-नगर वालों की औलाद में से था परवानगी ले कर मंदराज बसाया। १६३९ ई०

१६६८ ई० और वहां सेंटजार्ज क़िला बनाया॥ सन् १६६८ में इंगलिस्तान के बादशाह दूसरे चार्ल्स ने बम्बई का टापू जो उस ने पुर्तगाल वालों से जहेज़ में पाया था। सौ रुपये साल ख़राज पर कम्पनी को दे डाला॥ कलकत्ता भी उन दिनों निरा एक गांव सा था। छोटानटी और गोविंदपुर इन दोनों गावों के साथ उस की सनद दिल्ली के बादशाह से ले कर वहां इन्हों ने फ़ोर्ट विलियम क़िला बनाया॥

१७१५ ई० सन् १७१५ में कलकत्ते के प्रेसिडेंट ने कुछ तुहफा तहाइफ़ के साथ दो साहिबों को एल्चियों के तौर पर फ़र्रुख़सियर के दर्बार में भेजा। बादशाह उन दिनों बीमार था॥ मर्ज़ी भगवान की इन्हीं एल्चियों के साथ हमिल्टन नाम जो डाक्टर था। उसी के इलाज से चंगा हुआ॥ हुक्म दिया इनाम मांग जो मांगेगा। मुंहमांगा पावेगा॥ इस ने अपने लिये तो कुछ न मांगा पर अर्ज़ किया कि अगर अन्नदाता खुश हैं तो कम्पनी को बंगाले में अड़तीस गांव की ज़मींदारी ख़रीदने की परवानगी मिले। और कलकत्ते के प्रेसिडेंट की दस्तक से जो माल रवाना हो महसूल के लिये उस की तलाशी न ली जावे॥ सच पूछो तो डाक्टर हमिल्टन ने बड़ी हिम्मत का काम किया। अपना नुक़सान सह के अपने मुलक वालों का फ़ाइदा चाहना हक़ीक़त में बड़ी हिम्मत का काम है बादशाह ने उस की दोनों बातों को मान लिया॥ उन दिनों में हिंदुस्तान से छीट और सूती कपड़ा इंगलिस्तान को बहुत जाता था अंगरेज़ों का इरादा था कि कलकत्ते के गिर्द ज़मींदारी लेकर इतने जुलाहे बसावें कि फिर कपड़ों की तलाश गांव गांव न करनी पड़े। क्या अपरम्पार महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि यहां के जुलाहे तो जुलाहे ही बने रहे और इंगलिस्तान वाले जहाज़ भर भर कर अब यहां सूती कपड़े पहुंचाने लगे॥ निदान ज़मींदारी तो उस वक़्त बंगाले के सूबेदार ने अंगरेज़ों के हाथ नहीं लगने दी। ज़मींदारों को बेचने की मनाही कर दी॥ लेकिन इन के माल पर महसूल

मुआफ़ हो जाने से उसे बहुत नुक़सान पहुंचा। प्रेसिडेंट ने सारा माल अपनी दस्तक से मंगाना और रवाना करना शुरू किया यानी जो माल कम्पनी का नहीं था उस को भी अपने और दूसरे साहिबों के फ़ायदे के लिये दस्तक दे कर महसूल की तलाशी से बचाने लगा॥

इस अर्से में फ़रासीसियों ने पटुच्चेरी को मज़बूत कर लिया था। जब सन् १७४४ में इंगलिस्तान और फ़रासीस के दर्मियान दुश्मनी पैदा हुई तो उन्हों ने हज़ार दो हज़ार सिपाही भेज कर मंदराज घेर लिया॥ अंगरेज़ वहां उस वक़्त ३०० से ज़ियादा न थे पांच दिन घिरे रह कर फ़रासीसियों के क़ौल क़रार पर दर्वाज़ा खोल दिया। और जो कुछ था उन के हवाले किया॥ लेकिन थोड़े ही दिनों बाद कुछ अंगरेज़ी जंगी जहाज़ आगये तो उन्हों ने मंदराज में भी क़ब्ज़ा किया और पटुच्चेरी जा घेरा। पर महीने भर बाद बरसात आजाने के सबब घेरा उठा लेना पड़ा॥ १७४४ ई०

तनजौर का राजा प्रतापसिंह नाबालिग़ था उस के भाई साहूजी ने अंगरेज़ों से कहा कि तनजौर वाले प्रतापसिंह से नाराज़ और मुझ से राज़ी हैं अगर गद्दी दिला दो देवीकोटे का क़िला और ज़िला तुम्हारे हवाले करूं अंगरेज़ी फ़ौज चढ़ गयी। आख़िर तब लेफ़्टिनेंट था धावा इसी के नाम से हुआ क़िला टूटने पर प्रतापसिंह ने देवीकोटा अंगरेज़ों को दे दिया और साहूजी के खाने को कुछ सालाना मुक़र्रर कर दिया अंगरेज़ी सर्कार इस बात से राज़ी हो गयी॥

पटुच्चेरी का फ़रासीसी गवर्नर डूप्ले अंगरेज़ों से बड़ी लाग रखता था। जो बात इस मुल्क में अब अंगरेज़ों को है वह उसे फ़रासीसियों के लिये हासिल किया चाहता था॥ सन् १७४८ में दखन के सूबेदार आसिफ़जाह के मरने पर* जब उस के बेटे पोतों में तकरार हुई १७४८ ई०

---

* यह १०४ बरस का होकर मरा॥

गये। और जो अंधारे बेख़बरी में क़िले के अंदर रहे वह दूसरे दिन सिराजुद्दौला की क़ैद में आये॥ जब उन के अफ़सर हालवेल साहिब को मुश्कें बांध कर उस के सामने लाये उस ने तुर्त उस की मुश्कें खुलवा दीं और कहा कि ख़ातिरजमा रक्खो तुम्हारा कुछ नुक़सान न होने पावेगा। लेकिन रात को जब क़ैदियों के रखने के लिये कोई मकान न मिला तो सिराजुद्दौला के आदमियों ने १४६ अंगरेज़ों को एक कोठरी में जो कुल १८ फ़ुट लंबी और १४ फ़ुट चौड़ी थी बंद कर दिया॥ इस कोठरी का नाम अंगरेज़ी में "ब्लैकहोल" यानी काली बिल रक्खा गया है जो कुछ उन क़ैदियों के जी पर रात को बीती उन्हीं का जी जानता होगा बहुतेरे घायल थे बहुतेरे शराब के नशे में गर्मी की शिद्दत थी प्यास निहायत थी। सुबह को जब दर्वाज़ा खुला कुल २३ जीते निकले सो शकल उन की भी मुर्दों कीसी बन गयी थी॥ हालवेल साहिब को सिराजुद्दौला के सामने ले गये उस ने इस की कुछ भी दाद फ़र्याद न सुनी यही पूछता रहा कि बतलाओ अंगरेज़ों ने ख़ज़ाना कहां गाड़ा है और उस के और दो और अंगरेज़ों के पैरों में बेड़ियां डलवा कर इन तीनों को तो एक खुली कश्ती पर क़ैद रहने के लिये मुर्शिदाबाद भेजा और बाक़ी को छोड़ दिया। मुर्शिदाबाद में अलीवर्दीख़ां की बेगम ने इन तीनों को भी सिराजुद्दौला से सिफ़ारिश कर के छुड़वा दिया॥ जब यह ख़बर मंदराज में पहुंची वहां वालों ने ६०० गोरे और १५०० सिपाही दे कर क्लाइव को जो अब बंगालिस्तान से लेफ़्टिनेंट कर्नल हो आया था १० जहाज़ों पर कलकत्ते रवाना किया।

१७५७ ई० दूसरी जनवरी सन् १७५७ को क्लाइव ने कलकत्ता लिया॥ तीसरी फ़रवरी को सिराजुद्दौला ४०००० आदमियों की भीड़ भाड़ ले कर कलकत्ते के पास पहुंचा लेकिन क्लाइव ने क़िले से निकल कर उस पर एक ऐसा हल्ला किया कि अगर्चे उस हल्ले में क्लाइव को १२० गोरे १०० सिपाही और दो तोपें खोकर फिर क़िले में पनाह लेनी पड़ी। पर सिराजुद्दौला ने २२ अफ़सर और ६०० आदमियों के मारे जाने से घबरा कर इस शर्त पर सुलह कर

ली ॥ कि जो कुछ कम्पनी का माल असबाब लूट और ज़बती में आया था सब लौटा दिया जावे कम्पनी के आदमी कलकत्ते में क़िला चाहे जैसा मज़बूत बनावें। टकसाल अपनी जारी करें ॥ अठतीसों गांव पर जिन की सनद १०१० से उन्हों ने पायी थी अपना क़ब्ज़ा रक्खें। और महसूल की मुआफ़ी के लिये उन की दस्तक काफ़ी समझी जावे ॥ इस में शक नहीं कि यह शर्त सिराजुद्दौला ने ख़ाली भुलावा देने और क़ाबू पाने के लिये की थी। जी में उस के दग़ा थी ॥ वह अंगरेज़ों से दिली नफ़रत रखता था और फ़रासीसियों की पक्ष करता था। बल्कि उन्हें नौकर भी रखने लगा था ॥ क्लाइव ने ख़ूब समझ लिया था कि इस मुल्क में या तो अंगरेज़ ही रहेंगे और या फ़रासीसी, दोनों का हरगिज़ गुज़ारा नहीं। एक नियाम में दो तलवारों का रहना कभी होता नहीं ॥ पस जब सिराजुद्दौला ने फ़रासीसियों का सहारा ढूंढा। तो क्लाइव को ख़ामख़ाह उस का इलाज करना पड़ा ॥ सिराजुद्दौला से सब नाख़ुश थे। उस के ज़ुल्म से लोग तंग आगये थे ॥ हर एक को उस के हाथ से अपनी इज़्ज़त का ख़ौफ़ था। हर एक अपने जी में उस का ज़वाल चाहता था ॥ निदान उस के बख़्शी अलीवर्दीख़ां के दामाद मीरजाफ़र और उस के दीवान राय दुर्लभ और * जगत सेठ महताबराय ने अपनी जान माल और इज़्ज़त आबरू उस ज़ालिम के हाथ से बचाने को मुर्शिदाबाद के रज़ीडंट वाट्स साहिब की मारिफ़त क्लाइव के पास यह पयाम भेजा कि अगर आप सिराजुद्दौला की जगह पर मीरजाफ़र को सूबेदार बनाओ तो हम सब आप की मदद करते हैं। क्लाइव ने कहला भेजा कि "ख़ातिरजमा रक्खो मैं ५००० आदमी ले कर आता हूं जिन्हों ने आज तक कभी पीठ नहीं दिखलायी अगर तुम सिराजुद्दौला को गिरफ़्तार न कर सको हम लोग ज़रूर उसे मुल्क से निकाल सकते हैं" ॥ और फिर साथ ही उन शर्तों पर जो सिराजुद्दौला के साथ ठहरी थीं

---

* इस किताब बनाने वाले के परदादा के चचेरे भाई ॥

मीरजाफ़र से एक अहदनामा लिखवा लिया लेकिन उस में इतना और बढ़ाया गया कि कलकत्ते से दखन काल्पी तक कम्पनी की ज़मींदारी समझी जावे फ़रासीसियों का जो कुछ हो वह अंगरेज़ों का और फ़रासीसी हमेशा के लिये बंगाले से निकाल दिये जावें। और मीरजाफ़र की तरफ़ से करोड़ रुपये कम्पनी को पचास लाख कलकत्ते के अंगरेज़ों को बीस लाख हिंदुस्तानियों को सात लाख अर्मनियों को पचास लाख सिपाही और जहाज़ियों को और दस लाख कौंसल के मेम्बरों को नुक़सानी के तौर पर मिलें॥

सेठ अमीचंद का कलकत्ते में चार लाख रुपया लूटा गया था। और कुछ और भी नुक़सान हुआ था॥ वह सिराजुद्दौला के ज़रा मुंह लग गया था। और इस सबब से वाट्स साहिब का भी उस से बहुत काम निकलता था॥ वाट्स साहिब ने अमीचंद को भी इस मशवरे में शरीक किया। लेकिन अमीचंद को लालच ने घेरा॥ कहा कि जो कुछ अंगरेज़ों को ख़ज़ाने से मिले ५) सैकड़ा मुझे दो नहीं तो मैं अभी सिराजुद्दौला से यह सारा भेद खोल दूंगा वाट्स ने क्लाइव को लिखा क्लाइव ने देखा कि अमीचंद तो हम सब को आफ़त में डाला चाहता है नाचार दो काग़ज़ों पर दो तरह का अहदनामा लिखा लाल काग़ज़ पर जो अहदनामा लिखा उस में तो अमीचंद को ५) सैकड़ा देने का इक़रार था। और सफ़ेद काग़ज़ पर जो लिखा उस में उस का नाम ही न था॥ इन दोनों काग़ज़ों पर जब कौंसल वालों के दस्तख़त होने लगे अडमिरल यानी अमीरुल् बहर वाट्सन ने लाल काग़ज़ पर दस्तख़त करने से इनकार किया लेकिन कौंसल वालों ने उस का दस्तख़त आप बना लिया। गोया फ़ार्सी मसल पर "गर ज़रूरत बुवद रवा बाशद" काम किया॥

निदान क्लाइव तीन हज़ार आदमी और ६ तोप ले कर कलकत्ते से निकला। सिराजुद्दौला भी पचास हज़ार सवार पियादे और ४० से ऊपर तोपें ले कर पलासी तक आया॥ चालीस पचास

फ़रासीसी भी उस के साथ थे तेईसवीं मई को उसी जगह लड़ाई हुई। सिराजुद्दौला ने पगड़ी उतार कर मीरजाफ़र के पैरों पर रख दी। और कहा कि अब मुआफ़ कीजिये। लेकिन उस ने यही सलाह दी कि आज लड़ाई मोक़ूफ़ रखिये। फ़ौज पीछे हटा लीजिये कल लड़ेंगे और राय दुर्लभ ने अर्ज़ की कि हुज़ूर का मुर्शिदाबाद ही तशरीफ़ ले चलना बिहतर है। बस इसी में ख़ैर है॥

निदान सिराजुद्दौला की फ़ौज का मुड़ना था। और अंगरेज़ों का चीतों की तरह हिरनों पर लपकना॥ सिराजुद्दौला की फ़ौज भागी। अंगरेज़ों ने छ मील तक पीछा किया यही पलासी की फ़तह गोया हिंदुस्तान में अंगरेज़ी अमलदारी की नेव जमी॥

सिराजुद्दौला के पैर मुर्शिदाबाद में भी न जमे भरोसा तो उसे किसी का था ही नहीं और भरोसा उसे तब हो सकता जब उस ने किसी के साथ कुछ भलाई की होती। एक बेगम और एक ख़ोजा साथ ले कर भागा लेकिन राजमहल के पास एक फ़क़ीर ने उसे पहचान लिया सिराजुद्दौला ने किसी ज़माने में उस के नाक कान कटवाये थे फ़क़ीर ने तुर्त वहां के हाकिम से ख़बर कर दी॥ वह मीरजाफ़र का भाई था सिराजुद्दौला को बांध कर मुर्शिदाबाद भेज दिया मीरजाफ़र को कुछ किसी क़दर रहम आया। लेकिन उस का बेटा मीरन निरा पत्थर था॥ वे अपने बाप की इत्तिला के उस की जान ले डाली। सिराजुद्दौला की उमर तब तक बीस बरस की भी नहीं हुई थी॥

ख़ज़ाने की जब मोजूदात ली गयी डेढ़ करोड़ रुपया शुमार में आया। तो भी अहदनामे के बमूजिब सब के देने को काफ़ी न था॥ तब यह ठहरा कि आधा तो चुका दिया जावे। और आधा तीन क़िस्तों में तीन साल के दर्मियान दिया जावे॥ क्लाइव को मीरजाफ़र ने अहदनामे के सिवाय सोलह लाख रुपया और दिया अमीचंदजी फूले हुए थे। उन्हों ने अपने हिसाब से अपने हिस्से का रुपया तीस पैंतीस लाख जोड़ रक्खा था जब अहदनामा पढ़ा गया और इन्हों ने अपना नाम न सुना

घबगये ॥ और बोल उठे कि साहिब वह तो लाल काग़ज़ पर था। क्लाइव ने जवाब दिया कि ठीक लेकिन यह सफ़ेद काग़ज़ पर है वह लाल काग़ज़ ख़ाली आप को सब्ज़ बाग़ दिखलाने के लिये था आप को इस में से एक पैसा भी नहीं मिलेगा ॥ अमीचंद ग़श खा के ज़मीन पर गिर पड़ा। नौकर पालकी में डाल के घर ले गये डेढ़ बरस के अंदर पागल हो के मर गया * ॥

उधर दखन में अंगरेज़ और फ़रासीसियों की लड़ाई न

१७५८ ई० मिटी। कोंटलाली ने भी जो १७५८ में फ़रासीसियों की तरफ़ से यहां का गवर्नर जेनरल हो कर आया था-डूप्ले की तरह अंगरेज़ों को उखाड़ना और फ़रासीसियों की अमल्दारी को फैलाना चाहा यहां तक कि अंगरेज़ों ने मौसलीपट्टन उन से छीन कर दखन के सूबेदार सलाबतजंग से उस की और कई और ज़िलों की अपने नाम सनद लिखवाली॥ और यह भी उस से इक़रार ले लिया कि वह फ़रासीसियों से कभी कुछ सरोकार न रक्खे और सन् १७६१ में सिवाय कल्लीकोट और सूरत की कोठियों के और कुछ भी फ़रासीसियों के क़ब्ज़े में न छोड़ा कहते हैं कि जब अंगरेज़ों ने पटुच्चेरी लिया और उस पर अंगरेज़ी निशान चढ़ाया क़िले और जहाज़ों पर की तोपें सलामी से गोया कान बहरे करती थीं। हज़ार तोपों की सलामी कुछ हंसी ठट्ठा न थी॥ लाली बुरी तरह से फ़रासीस में क़तल किया गया। और फिर तभी से फ़रासीसियों ने निरास हो कर यहां अपनी अमल्दारी जमाने का ख़याल बिल्कुल छोड़ दिया ॥ हिंदुस्तान के दिन अच्छे थे क्योंकि अंगरेज़ी अमल्दारी में अगर

---

* अफ़सोस है कि क्लाइव ऐसे मर्द से ऐसी बात ज़हूर में आवे। पर क्या करें ईश्वर को मंज़ूर है कि आदमी का कोई काम बे ऐब न रहे ॥ इस मुल्क में अंगरेज़ी अमल्दारी शुरू से आज तक मुआमले की सफ़ाई और क़ौल क़रार की सचाई में गोया धोबी का धोया हुआ सफ़ेद कपड़ा रहा है। ख़ाली इसी अमीचंद ने उस में यह एक छींटा सा लगा दिया है ॥

हज़ार ऐब हों तो भी फ़रासीसी ग़मल्दारी से करोड़ दर्जे हम उस को बिहतर कहेंगे। फ़रासीसियों की जहां कहीं ग़ैर मुल्क में ग़मल्दारी हुई सिवाय लूट क़त्ल और रइय्यत की तबाही के और कुछ भी सुनने में नहीं आया और अंगरेज़ों ने जिस जगह क़ब्ज़ा किया दिन पर दिन उस की तरक्क़ी होती गयी जिन लोगों ने फ़रीसीस की तवारीख़ पढ़ी है और वहां वालों के सुभाव से अच्छे वाक़िफ़ हैं कभी हमारे इस लिखने पर अंगरेज़ों की ख़ुशामद का शुबहा न करेंगे॥

सन् १७५६ में दिल्ली के वलीअहद आलीगुहर ने अपने बाप १७५६ ई०
बादशाह आलमगीरसानी से नाराज़ हो कर अवध के सूबेदार की बहकावट से बिहार पर चढ़ाई की लेकिन क्लाइव मीर-जाफ़र की मदद को पहुंच गया। इस लिये वलीअहद को भागना पड़ा॥ बादशाह ने जो ज़मींदारी कम्पनी को दी थी उस की मालगुज़ारी तीस लाख रुपये के क़रीब जगतसेठ की सिफ़ारिश से जागीर के तौर पर ख़िताब के साथ दे कर क्लाइव को अपने अमीरों में शुमार कर लिया। और वलीअहद की गिरफ़्तारी के लिये शुक्का भी लिख दिया॥

सन् १७६० में क्लाइव इंगलिस्तान को गया और वहां अपने १७६० ई०
बादशाह से बड़ी इज़्ज़त के साथ लार्ड का ख़िताब पाया। ऐसा दौलतमंद हो कर अब तक कभी कोई यहां से फ़रंगिस्तान को नहीं लौटा॥ वलीअहद अपने बाप के मारे जाने पर जब बादशाह हुआ। शाहआलम अपना लक़ब रक्खा॥ फ़ौज ले कर बिहार पर चढ़ा। पटने के सामने आ पड़ा॥ अंगरेज़ों ने उसे फिर शिकस्त दी और पीछा किया। मीरन भी साथ था डेरे पर बिजली गिरने से मर गया॥ मीरजाफ़र के दामाद क़ासिमअलीख़ां की नीयत बिगड़ी उस ने बर्दवान मेदनीपुर और चटगांव ये तीन ज़िले और पांच लाख रुपये कम्पनी को और बीस लाख कौंसलवालों को देने का क़रार कर के अंगरेज़ों को इस बात पर राज़ी कर लिया कि मीरजाफ़र को तो वह सूबेदारी से मोक़ूफ़ करें। और क़ासिमअलीख़ां को उस की जगह

मसनद पर बिठायें ॥ बादशाह से भी चौबीस लाख रुपया साल अदा करने के इक़रार पर सनद हासिल हो गयी क़ासिमअलीख़ां का इरादा मीरजाफ़र की जान लेने का था। लेकिन वह कलकत्ते में जा रहा इस से बचगया ॥ बहाने अंगरेज़ों के पास मीरजाफ़र की मोक़ूफ़ी के बहुत से पहले वह क़िस्तों का रुपया बिलकुल अदा नहीं कर सका था। दूसरे बादशाह से लिखा पढ़ी करता था तीसरे उच लोगों से साज़िश रखता था ॥

उन दिनों में कम्पनी के नौकरों को तिजारत की कुछ मनाही न थी तनख़्वाह से बढ़ कर तिजारत में फ़ाइदा उठाते थे। पान सुपारी तमाकू वग़ैरः सब चीज़ की तिजारत करते थे ॥ जब कम्पनी की तरह कम्पनी के नौकरों ने भी माल पर महसूल देना बंद किया बल्कि जो लोग कम्पनी के नौकर नहीं थे उन के माल को भी अपने नाम से बे महसूल चलाने लगे क़ासिमअलीख़ां घबराया। अपनी आमदनी का एक बड़ा सा हिस्सा उड़ जाता देखा ॥ कौंसलवालों को लिखा लेकिन कौंसल वाले भी तो तिजारत करते थे। अपने माल पर महसूल देना किसे अच्छा लगता है क़ासिमअलीख़ां का लिखना कुछ भी ख़याल में न लाये ॥ क़ासिमअलीख़ां ने गुस्से में आकर परमिट बिलकुल मोक़ूफ़ कर दी यह बात सुन कर कि अब किसी के माल पर कुछ महसूल न लिया जायगा अंगरेज़ों के छक्के छूट गये क्योंकि फिर फ़र्क़ क्या बाक़ी रहा। जिस भाव इन का माल पड़ता था उसी भाव चोरों का भी पड़ गया ॥ अंगरेज़ों ने क़ासिमअलीख़ां से कहा कि तुम सिवाय हम लोगों के चोर किसी का माल बे महसूल मत जाने दो चोर जब उस ने इन का यह ग़ैरवाजिब कहना न मान कर मुक़ाबले पर कमर बांधी इन्हों ने उस की मोक़ूफ़ी चोर मीरजाफ़र की बहाली का इश्तिहार दे दिया। मीरजाफ़र ने इन्हें तीस लाख रुपया नक़द देने चोर बारह हज़ार सवार चोर बारह हज़ार पियादों का ख़र्च चलाने के लिये इक़रारनामा लिख दिया ॥ चौबीसवीं जुलाई को अंगरेज़ी फ़ौज मुर्शिदाबाद में दाख़िल हुई चोर क़ासिमअलीख़ां वहां से

पटने की तरफ़ भागा। रास्ते में उस की फ़ौज से और अंगरेज़ों से मढ़िया और उधवानाले में दो लड़ाइयां हुई क़ासिमअलीख़ां की तरफ़ से समरू* जो साबिक़ फ़रासीसियों के यहां सार्जेन्ट था ख़ूब लड़ा। लेकिन फ़तह अंगरेज़ों की रही इस ख़ौफ़ से कि जगतसेठ अंगरेज़ों का मददगार है क़ासिमअलीख़ां ने उसे हवालात में अपने साथ रक्खा। जब मुंगेर से आगे बढ़ा जगतसेठ महताबराय और उस के भाई सरूपचंद को रास्ते में अपने हाथ से क़त्ल कर डाला। सामहने खड़ा करके तीरों से मारा। उन के साथ एक उन का नमकहलाल ख़िदमतगार चुन्नी रह गया था। बहुतेरा समझाया। लेकिन साथ न छोड़ा। जब क़ासिमअलीख़ां तीर चलाता। वह सामहने आकर खड़ा हो जाता। जब वह मर कर गिरगया है। तब दोनों भाइयों के तीर लगा है। पटने पहुंच कर उस ज़ालिम ने दो सौ के लगभग अंगरेज़ों को जिन्हें उस ने क़ैद कर रक्खा था। कटवा डाला॥

अंगरेज़ों ने कर्मनासा नदी तक उस का पीछा किया निदान वह इलाहाबाद में बादशाह के पास जा कर नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला अवध के सूबेदार को कुछ फ़ौज के साथ चढ़ा लाया। और पटने में अंगरेज़ों से लड़ कर और शिकस्त खाकर फिर भागा। अंगरेज़ों ने फिर पीछा किया। बक्सर में शुजाउद्दौला से एक अच्छी लड़ाई हुई उस के साथ पचास साठ हज़ार सिपाह की भीड़ भाड़ थी और अंगरेज़ों के साथ कुल ८५० गोरे और ७२१५ हिंदुस्तानी सवार और पियादे लेकिन शुजाउद्दौला को शिकस्त खाकर भागना पड़ा॥ उस के दो हज़ार आदमी इस लड़ाई में काम आये बादशाह ने अंगरेज़ों को इस फ़तह की मुबारकबाद दी और लिखा कि ख़ूब हुआ जो मैं अपने वज़ीर की क़ैद से छूटा और फिर वह उस तारीख़ से अंगरेज़ों की हिमायत में चला आया। अंगरेज़ी फ़ौज इलाहाबाद की तरफ़ बढ़ी। रास्ते में चनारगढ़ का क़िला घेरा ज़ियादा बनारस में रहगयी॥

---

* Sombre

१७६५ ई० सन् १७६५ के शुरू में मीरजाफ़र इस दुनया से कूच कर गया। और उस के भाई नजमुद्दौला को अंगरेज़ों ने मसनद पर बिठाया॥ इस से यह क़रार हो गया कि नाइब सूबेदार अंगरेज़ों की सलाह से मुक़र्रर हुआ करे। और बे उन की मंज़ूरी के मौक़ूफ़ न किया जावे॥

लार्ड क्लाइव

तीसरी मई को लार्ड क्लाइव गवर्नर और कमांडर इन चीफ़ हो कर फिर कलकत्ते में पहुंचा। और इंतिज़ाम की दुरुस्ती के लिये रायदुल्लभ और जगतसेठ खुशहालचंद को मुहम्मदरज़ाख़ां नाइब सूबेदार के शामिल किया॥ जिस रोज़ लार्ड क्लाइव कलकत्ते में पहुंचा। उसी रोज़ शुजाउद्दौला कोड़े में अंगरेज़ों से शिकस्त खा कर और सिवाय अंगरेज़ों पर भरोसा रखने के और कुछ इलाज न देख कर जेनरल कार्नाक के पास चला आया॥ अंगरेज़ों ने उस की बहुत ख़ातिरदारी की। और पचास लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च लेकर और इलाहाबाद और कोड़ा बादशाह को दिलवा कर सुलह कर ली॥ बनारस का राजा बलवंतसिंह बक्सर की लड़ाई में अंगरेज़ों से मिल गया था। बल्कि कहते हैं कि नव्वाब वज़ीर का जो मोरचा इस के सुपुर्द था इस ने उस में अंगरेज़ी लश्कर चला आने दिया और यही नव्वाब वज़ीर की शिकस्त का बड़ा सबब हुआ॥ इसी लिये इन्हों ने सुलहनामे में यह भी लिखवा लिया कि शुजाउद्दौला बलवंतसिंह को किसी तरह पर न छेड़े। और कुछ नुक़सान न पहुंचावे॥

बादशाह से इस वादे पर कि छब्बीस लाख रुपया सालाना जिस का क़ौल क़रार मीरजाफ़र से हुआ था अब बराबर पहुंचा चला जायगा लार्ड क्लाइव ने कम्पनी के लिये बंगाला बिहार और उड़ेसा तीनों सूबों की दीवानी का फ़र्मान लिखवा लिया। नाज़िम नाम को नजमुद्दौला बना रहा॥ लेकिन उस से यह ग़हद पैमान होगया कि सिवाय पचास लाख रुपया सालाना लेने के और कुछ सरोकार मुल्क से न रक्खे मुल्क का काम सब अंगरेज़ों के हाथ में रहे। लार्ड क्लाइव लिखता

है कि नजमुद्दौला इस बात से निहायत खुश हुआ और रुख़सत के वक़्त कहने लगा "अल्हम्दु लिल्लाह अब तो जितने चाहेंगे महल बनायेंगे"। सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उस १७६६ ई० का भाई सैफ़ुद्दौला उस की जगह बैठा। सन् १७६० में लार्ड १७६० ई० क्लाइव इंगलिस्तान को चला गया॥

सन् १७६३ में जब इंगलिस्तान और फ़रासीस के दर्मियान सुलह हुई यह भी शर्त ठहर गयी कि सन् १७४९ में यहां जो सब फ़रासीसियों की कोठियां थीं उन के हवाले कर दी जावें। लेकिन बंगाले की सूबेदारी के इलाक़े में न वह कुछ फ़ौज रक्खें और न कोई क़िला बनावें॥ हिंदुस्तान में इस गयी बला को फिर जगह देना कुछ इंगलिस्तान वालों की दानाई का काम न था। सन् १७६५ में दक्षन के सूबेदार निज़ामअ़ली ने जो सन् १७६१ में अपने भाई सलाबतजंग को क़ैद कर के मसनद पर बैठा था कर्नाटक के मुल्क पर चढ़ाई की लेकिन मुहम्मद-अ़ली की मदद पर अंगरेज़ी फ़ौज को मैदान में देख कर पीछे हटा॥ लार्ड क्लाइव ने मुहम्मदअ़ली को बादशाह से कर्नाटक की जुदा सनद दिलवा दी और गंजूर छोड़ कर शिमाली सर्कार * की वैसी ही एक सनद कम्पनी के नाम लेली। पर मंदराज की गवर्नमेंट ने ख़ौफ़ में आ कर निज़ामअ़ली को सालाना ख़राज देने का क़रार कर लिया और यह भी लिख दिया कि अंगरेज़ी फ़ौज निज़ामअ़ली की मदद करेगी॥ इस ज़माने में मैसूर के राज पर हैदरअ़ली का इख़्तियार होगया था। इस का बाप सिरे के नव्वाब की चाकरी में पियादे से फ़ौजदार बनगया था॥ और यह ख़ुद मैसूर के दीवान नन्जीराज की फ़ौज में रहते रहते और बहादुरी और जिगरे के काम करते करते ऐसा बढ़ा। कि वहां के राजा के लिये तो खाने को पिंशन मुक़र्रर कर दिया और आप सारे मुल्क का मालिक हो गया॥ बिदनौर में गड़ा ख़ज़ाना यानी दफ़ीना भी पाया। चारों तरफ़ अपनी अ़मलदारी

* गंजाम विज़िगापट्टन राजमहेन्द्री मछलीबंदर और गंजूर यह पांचों ज़िले शिमाली सर्कार कहलाते हैं॥

बढ़ाने लगा ॥ सन् १७६० में निज़ामअ़ली ने मैसूर पर चढ़ाई की। अंगरेज़ी फ़ौज भी इक़रार के मुवाफ़िक़ उस के साथ हुई ॥ तीसरी सिप्तम्बर को हैदरअ़ली ने अंगरेज़ी फ़ौज से लड़ कर शिकस्त खायी हैदरअ़ली निज़ामअ़ली से मिल गया। दोनों ने अंगरेज़ों का मुक़ाबला किया ॥ उन की भीड़ भाड़ सत्तर हज़ार आदमियों की थी और इन की तरफ़ कुल बारह हज़ार लेकिन दुश्मनों ने शिकस्त खायी और उन की ६४ तोप अंगरेज़ों के हाथ आयीं निदान निज़ामअ़ली ने तो कुछ दे दिला कर अंगरेज़ों से सुलह कर ली और हैदरअ़ली लड़ता रहा। कभी उस का कुछ नुक़सान हो जाता कभी अंगरेज़ों का कभी इन का कोई क़िला उस के हाथ चला जाता और कभी उस का इन के हाथ आ जाता॥

१७६८ ई० यहां तक कि सन् १७६८ में हैदरअ़ली ने भी अंगरेज़ों से मेल कर लिया। इन्हों ने उस की जगहें उसे लौटा दीं उस ने इन की इन्हें दे दीं दोनों ने आपस में बचाव के लिये एक दूसरे की मदद करने का क़रार किया ॥

१७७७ ई० सन् १७७७ में सेफ़ुद्दौला के मरने पर उस का भाई मुबारकुद्दौला बंगाले का सूबेदार हुआ। नाबालिग़ था कम्पनी ने कहा कि इस के लिये ख़ाली सोलह लाख रुपया साल देना काफ़ी है इस से ज़ियादा देना कुछ ज़रूर नहीं चौंतीस लाख किफ़ायत

१७७३ ई० में आया ॥ सन् १७७३ में जब इंगलिस्तान की पार्लामेंट वालों ने देखा कि कम्पनी लालच में आ कर और अपने नौकरों को कम तनख़्वाहें दे कर मुल्क का इंतिज़ाम बिगाड़ती है और क़र्ज़ भी बढ़ाती जाती है एक क़ानून ऐसा जारी किया कि जिस से अठारह लाख रुपये साल पर एक गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हो और उस की कौंसल में चार मिम्बर अस्सी अस्सी हज़ार रुपये सालाने के रहें। कम्पनी को गवर्नर जेनरल के मुक़र्रर करने का इख़्तियार मिले लेकिन मंज़ूरी उस की बादशाह के हाथ रहे पांचवें साल गवर्नर जेनरल बदला जाय और कलकत्ते में एक सुप्रिम कोर्ट क़ाइम की जाय उस के तीनों जज बादशाह के हुज़ूर से मुक़र्रर हुआ करें ॥

वारन् हेस्टिंग्ज़ पहला गवर्नर जेनरल

पहला गवर्नर जेनरल जो यहां मुक़र्रर हुआ वारन हेस्टिंग्ज़ था। यह सन् १७७० में नोकर हो कर आया था और इस वक़्त बंगाले की गवर्नरी के उहदे पर था।

वारन् हेस्टिंग्ज़ ने जब देखा कि क्लाइव की तजवीज़ बमूजिब नव्वाब और कम्पनी की शराकत में हुकूमत रहने से कभी इंतिज़ाम दुरुस्त न होगा ज़िले ज़िले में अंगरेज़ी हाकिम भेज कर कलकत्ते में सदर बोर्ड आफ़ रेवन्यू और सदर निज़ामत और सदर दीवानी की अदालतें मुक़र्रर कर दीं इस में शक नहीं कि हिंदुस्तानी फिर भी अंगरेज़ी उहदेदारों के शरीक रहे। लेकिन नोकर सब कम्पनी के होगये। कलक्टरी और दीवानी के हाकिम का शरीक एक दीवान रहता था फ़ौजदारी के हाकिम के साथ ज़िले का क़ाज़ी मुफ़्ती और मोलवी बैठता था। बोर्ड आफ़ रेवन्यू में एक हिंदुस्तानी रायरायां के ख़िताब से था।

जब ज़रा हाल शाहआलम बादशाह का सुना इस के दिल में फिर दिल्ली के दर्मियान तख़्त पर बैठने की हविस समायी। अंगरेज़ों ने कुछ मदद न की। इस ने तुक्काजी होलकर और महादजी सेंधिया के पास पयाम भेजा उन मरहठों ने सन् १७७१ में इसे दिल्ली लेजा कर तख़्त पर बैठा दिया। और इलाहाबाद और कोड़े का इलाक़ा उस से ज़बर्दस्ती अपने नाम लिखवा लिया। अंगरेज़ों ने इस बहाने कि अब तो आप हमारे दुश्मनों से यानी मरहठों से मिल गये इलाहाबाद और कोड़ा दोनों ज़ब्त कर के पचास लाख पर शुजाउद्दौला के हाथ बेच डाला। और लार्ड क्लाइव ने जो तीनों सूबों की दीवानी के बाबत् छब्बीस लाख रुपया साल देने का क़रार लिख दिया था वह बिलकुल गोया पानी से धो डाला।

शुजाउद्दौला मुद्दत से फ़िक्र में था कि रुहेलखंड रुहेलों से छीन ले क़ाबू न पाता था। अब लड़ाई का ख़र्च और चालीस १००४ ई०

लाख रुपया नक़द देना क़बूल कर के अंगरेज़ों को उन पर चढ़ा ले गया॥ बेचारे रुहेले शिकस्त खाकर तीन तेरह हो गये सिर्फ़ फ़ैज़ुल्लाहख़ां उन के सर्दारों में से बच रहा। शुजाउद्दौला ने उसे भी तंग किया और निचोड़ा लेकिन फिर रुहेलखंड में उसे पंदरह लाख का इलाक़ा (रामपुर) जागीर के तौर पर देदिया॥

१००५ ई० सन् १००५ के शुरू में शुजाउद्दौला दूसरी दुन्या को सिधारा। और उस की मसनद पर उस का बेटा आसिफ़ुद्दौला बैठा॥ कौंसल वालों की यह राय ठहरी कि शुजाउद्दौला से जो अहद पैमान हुए थे वह उसी की ज़िंदगी भर के लिये थे। आसिफ़ुद्दौला के साथ तब बहाल रहेंगे जब वह बनारस का इलाक़ा कम्पनी को नज़र करे और अंगरेज़ी फ़ौज का ख़र्च बढ़ा कर दो लाख साठ हज़ार रुपया महीना कर दे॥ मसल मशहूर है ज़बर्दस्त का ठेंगा सिर पर आसिफ़ुद्दौला को नाचार बनारस का इलाक़ा भी देना पड़ा। और फ़ौज का ख़र्च भी बढ़ाना पड़ा॥

सन् १०६१ में बालाजीराव पेशवा के मरने पर और फिर सन् १००२ में उस के बड़े लड़के माधवराव पेशवा के मरने पर उस का भाई रघुनाथराव जिसे राघोबा भी कहते हैं उस के छोटे लड़के नारायणराव पेशवा को मार कर आप पेशवा बन बैठा था। पर जब सुना कि नारायणराव की रानी के लड़का हुआ और सींधिया और हुलकर उस की पच्छ पर हैं डर कर गुजरात की तरफ़ भाग गया॥ और बम्बई में अंगरेज़ों से मदद चाही। बम्बई वालों ने सालसिट का टापू और उस के पास बस्सीन का बंदर जो उस वक़्त मरहठों के क़ब्ज़े में था कम्पनी के नाम लिखवा कर कुछ फ़ौज दे दी॥ पर कलकत्ते की कौंसल वालों ने यह बात मंज़ूर न की। और
१००६ ई० अपना अजंट पूना भेज कर पुरंदर के दर्मियान सन् १००६ ई० में नारायणराव के लड़के से जो रघुनाथराव के भागने पर पेशवा हो गया था ख़ाली सालसिट का टापू लेकर और बस्सीन का दावा छोड़ कर सुलह कर ली॥

सन् १७७८ में पेशवा के मंत्रियों में यानी अहलकारों में १७७८ ई०
फूट पड़ी। नान्हा फड़नवीस ने तो पेशवा की तरफ़ रह कर सेंधिया से मदद ली और बाबू सखाराम ने रघुनाथराव की तरफ़ हो कर अंगरेज़ों से मदद मांगी॥ जब अंगरेज़ी फ़ौज से पूना कुल आठ कोस रह गया। कर्नल इगर्टन और कर्नल कोबर्न उस के अफ़सरों ने तोपें तालाब में डाल कर फ़ौज को पीछे हटने का हुक्म दिया॥ और जब दूसरे दिन वरगांव में पेशवा की फ़ौज ने आ घेरा। सालसिट पेशवा को और भड़ोंच सेंधिया को दे कर कम्पनी की तरफ़ से अहदनामा लिख दिया॥ कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स ने दोनों अफ़सरों को इस क़सूर में मोक़ूफ़ किया। बम्बई के गवर्नर ने उस अहदनामे को जो उन्हों ने वरगांव में लिखा था बिल्कुल नामंज़ूर किया और गवर्नर जेनरल ने भी यही मुनासिब समझा॥ क्योंकि उन अफ़सरों ने अहदनामा लिखते वक़्त यह भी साफ़ ज़ाहिर कर दिया था कि हमको अहदनामा लिखने का पूरा इख़्तियार हासिल नहीं है निदान इसी बात पर फिर लड़ाई शुरू हुई। उस अंगरेज़ी फ़ौज ने जो जेनरल गोडार्ड के तहत में कलकत्ते से मदद के लिये बम्बई गयी थी अहमदाबाद में दख़ल कर लिया और सेंधिया और हुलकर ने उस से ऐसी शिकस्त खायी कि अपना सारा डेरा डंडा अंगरेज़ी बहादुरों के लिये छोड़ १७८० ई०
भागे कुछ न बन आयी॥

गोहद के राना * का कम्पनी के साथ अहदनामा हो गया था। अब सेंधिया उस के इलाक़े की तरफ़ झुका॥ तो उस ने भी अंगरेज़ों से मदद चाही कप्तान पोफ़म ने जो कुछ थोड़ी सी सिपाह लिये जेनरल गोडार्ड की फ़ौज से शामिल होने को जाता था। गवर्नमेंट का हुक्म पा कर तुर्त मरहठों को गोहद के इलाक़े से मार हटाया और फिर उन का लहार का क़िला फ़तह करता हुआ ग्वालियर का क़िला जा घेरा॥ यह क़िला मज़बूती में मशहूर है। खड़े पहाड़ पर बना है॥ वहां वाले

* जो अब धौलपुर वाड़ी का राना कहलाता है॥

समझे हुए थे कि अगर दस आदमी भी क़िले में ख़ाली पत्थर लुढ़काने को हों हमला करके दुश्मन कभी उस तक न पहुंच सकेगा चाहे वह लाखों फ़ौज क्यों न लावे। और अब तो (सन् १७७९) सेंधिया के एक हज़ार सिपाही चुने हुए लड़ाई के सब सामान समेत उस के अंदर मौजूद थे पोफ़म हैरान था किस ढब उस पहाड़ पर चढ़े॥ इत्तिफ़ाक़ से एक चोर उसे ऐसा मिल गया कि जो क़िले में चोरी करने के लिये एक छुपी हुई पगडंडी से उस पहाड़ पर चढ़ जाया करता था। पोफ़म ने यह रास्ता उस से मालूम कर लिया॥ दूसरे दिन सूरज निकलने से पहले आगे आप हुआ और पीछे फ़ौज सीढ़ियां लगा कर रस्से लटका कर खूंटियां गाड़ कर घास की जड़ें पकड़ कर यह उस वक़्त नहीं मालूम होता था कि आदमी हैं या बंदर सब के सब बात की बात में उसी राह पहाड़ों पर पहुंच दीवारों को डांक क़िले के अंदर दाख़िल हो गये। महरठों ने जो यकायक आंख मलते हुए अपने बिस्तरों से उठ कर दुश्मनों को क़िले के अंदर मौत की तरह सिर पर पाया छक्के छूट गये उसी दम क़िला छोड़ भागे॥ उधर गोडार्ड ने बस्सीन लिया और बम्बई की फ़ौज ने कङ्कन में पेशवा के सिपाहियों को भगाया इधर बंगाले की फ़ौज ने सिरोंज में सेंधिया के लश्कर को एक और शिकस्त दे दी लेकिन दखन में बखेड़ा बढ़ता देख कर और कौंसल वालों को अपने
१७८२ ई० ख़िलाफ़ पा कर गवर्नर जेनरल ने सेंधिया से तो इस शर्त पर सुलह कर ली कि सिवाय उस इलाक़े के जो गोहद के राना को दिया गया था बाक़ी जो कुछ जमना पार अंगरेज़ों के हाथ लगा था सेंधिया को लौटा दिया जाय। और पेशवा से इस शर्त पर सुलह कर ली कि बस्सीन समेत जो कुछ अंगरेज़ों ने पुरंदर में सुलहनामा लिखे जाने के बाद फ़तह किया सब पेशवा को लौटा दिया जाय॥ और पेशवा कर्नाटक में उन सब इलाक़ों को जो हैदरअली ने दबा लिये थे उस से अंगरेज़ों को दिलवा देवे। और सिवाय पुर्टगीज़ों के यानी पुर्तगाल वालों के और किसी फ़रंगी को अपने मुल्क में कुछ कार बार न करने

दे । क्योंकि अंगरेज़ों को खटका फ़रासीसियों का था भड़ौंच सेंधिया के क़ब्ज़े में रहने दे । और अगर रघुनाथराव सेंधिया की अमलदारी में रहे तीन लाख रुपया साल उसे पेशवा के यहां से गुज़ारे को मिला करे ।

सन् १७८८ में फ़रासीस और इंगलिस्तान के दर्मियान लड़ाई शुरू हो जाने के सबब अंगरेज़ों ने यहां से फ़रासीसियों को बिलकुल बेदख़ल कर दिया । बंगाले की फ़ौज ने चंदरनगर पर क़ब्ज़ा किया । मंदराज की फ़ौज ने पटुचेरी लेकर उस का क़िला ढाह डाला । और कारीकाल और मछली बंदर और माही भी छीन लिया ।

हैदरअली से अंगरेज़ों का जो सुलहनामा हुआ था उस में शर्त थी कि बचाव के लिये दोनों एक दूसरे की मदद करें लेकिन जब मरहठों ने (१७७१) हैदरअली पर चढ़ाई की । तो अंगरेज़ों ने उसे कुछ भी मदद न दी । इस बात की उस के जी में बड़ी लाग थी । सन् १७८० में एक लाख फ़ौज ले कर चढ़ आया और अंगरेज़ी अमलदारी में हर तरफ़ लूट मार मचा दी । जो सब फ़रासीसी वग़ैरः फ़रंगी और जगहों से निकाले गये थे । अक्सर इस ने अपनी फ़ौज में भरती कर लिये थे । उन्हीं का बड़ा भरोसा था । और तोपख़ाना भी उस का सो तोपों का अच्छा सिलसिला था । अंगरेज़ी फ़ौज जो मंदराज के पास इकट्ठा हुई कुल पांच हज़ार थी । पहली ही लड़ाई में फ़ौज शिकस्त खायी । जो बचे मंदराज चले आये बड़ी घबराहट पड़ी । लेकिन कलकत्ते से रुपये और सिपाह की मदद बहुत जल्द पहुंची । तब तक हिंदू सिपाही जहाज़ पर नहीं चढ़ते थे । इसी लिये सारी राह खुशकी गये । इन के पहुंचने पर सात हज़ार की जमाअत हो गयी । कुछ फ़ौज मदद के लिये बम्बई से भी आयी । अंगरेज़ों को अपने क़िले और शहर बचाने की फ़िक्र थी । और दुश्मन को उन के लेने की । ग़रज़ सब लड़ाइयां हुईं । दोनों तरफ़ के बहादुरों ने अपनी अपनी बहादुरियां दिखलाईं । कभी एक का कोई क़िला या शहर या गांव दूसरे के क़ब्ज़े में चला

जाता। कभी वह उसी को अपने क़बज़े में ले आता या दूसरे का क़िला शहर और गांव जा दबाता। कभी एक की फ़ौज देख कर या उस की आमद सुन कर या रसद चुक जाने पर दूसरे की फ़ौज आप से आप हट जाती। कभी थोड़ी होने पर भी जी खोल कर ऐसी लड़ती कि या तो फ़तह पाती या उसी जगह कट जाती॥ सन् १७८१ में पहली जुलाई को कड़ालूर की राह में आठ हज़ार अंगरेज़ी फ़ौज ने अस्सी हज़ार दुश्मन की फ़ौज को ऐसी शिकस्त दी कि उस के दस हज़ार आदमी खेत रहे। इन के घायल मिला कर भी तीन सौ आदमी काम न आये॥ सत्ताईसवीं सितम्बर की लड़ाई में हैदरअली ने अपना तोपख़ाना बचाने को जान बूझ कर अपने पांच हज़ार सवार कटवा दिये। गोया किसी खेत की मूली थे॥

दिसम्बर में अस्सी बरस के ऊपर पहुंच कर हैदरअली इस दुनिया से उठगया। और उस का बेटा टीपू उस की जगह
१७८४ ई० मसनद पर बैठा॥ टीपू के मानी उस मुल्क की ज़ुबान में शेर है लड़ाई कुछ दिन और भी हुआ की। लेकिन ग्यारहवीं मई को सुलह हो गयी॥ जिस ने जिस का जो कुछ लिया था उसे वापस दे दिया। आगे के लिये अहदनामा लिख गया॥

इस अर्से में फ़रासीस और इंगलिस्तान के दर्मियान भी सुलह हो गयी थी। कहीं कुछ लड़ाई बाक़ी नहीं थी॥

सन् १७७५ से यानी जब से आसिफ़ुद्दौला ने बनारस का इलाक़ा कम्पनी को दे दिया। राजा चेतसिंह बनारस का राजा सर्कार कम्पनी अंगरेज़ बहादुर के ताबे हुआ॥ यह राजा बलवंतसिंह का बेटा था। पर ब्याही हुई रानी से न था॥ अंगरेज़ों ने बाईस लाख रुपया साल ख़िराज मुक़र्रर कर के उस इलाक़े की बहाली का अहदनामा राजा चेतसिंह के नाम लिख दिया। सन् १७७८ तक राजा चेतसिंह ने बराबर वह रुपया अदा किया॥ वारन हेस्टिंग्ज़ के दिल में राजा चेतसिंह की तरफ़ से रंज आ गया था। और उस का सबब यह था कि जिन दिनों में वारन हेस्टिंग्ज़ को कौंसल के कई मिम्बरों ने यहां से निकालना

चाहा था और आप कुल मुख़्तार हो गये थे राजा चेतसिंह का वकील उन मिम्बरों के पास आया करता था। निदान हेस्टिंगज़ ने लड़ाइयां पेश होने के सबब फ़ौज-ख़र्च के लिये राजा से पांच लाख रुपया साल तलब किया। राजा ने बहुतेरा कहा कि बाईस लाख का अहदनामा हो गया है लेकिन कमज़ोर की कौन सुनता है राजा को उस साल पांच लाख देना ही पड़ा। दूसरे साल इस की तलबी के लिये सर्कारी सिपाह आयी राजा को पांच लाख रुपये के सिवाय सिपाह का ख़र्च भी देना पड़ा। तीसरे साल राजा ने इस की मुआफ़ी के लिये दो लाख रुपया हेस्टिंगज़ को कलकत्ते में अपने वकील के हाथ तुहफ़ा के तौर पर भेजा। हेस्टिंगज़ ने वह भी रक्खा पांच लाख भी लिया। और लाख रुपया जुर्माने के नाम से वसूल किया। सन् १७८१ में पांच लाख के सिवाय पहले तो दो हज़ार लेकिन फिर एक ही हज़ार सवार तलब किये। राजा ने आधे सवार आधे बंदूक़ची पियादे तयार किये। पर जब हेस्टिंगज़ इस पर भी राज़ी न हुआ। राजा ने बीस लाख नज़राना दाख़िल करने का पैग़ाम भेजा। हेस्टिंगज़ ने पचास लाख तलब किया और बनारस की तरफ़ तरी की राह से रवाना हुआ। राजा ने बक्सर में पहुंच कर पैरों पर पगड़ी रख दी लेकिन हेस्टिंगज़ का दिल इस पर भी न पसीजा। बनारस पहुंच कर शिवाले पर यानी जहां राजा ठहरा था दो कम्पनी तिलंगों का पहरा भेज दिया। राजा ने इस पर भी कुछ सिर न उठाया। लेकिन राजा के नौकर अपने मालिक का क़ैद होना सुन कर शिवाले के गिर्द घिर आये इस हुजूम की ख़बर पाकर हेस्टिंगज़ ने दो कम्पनी तिलंगों की और भेज दीं। राजा के आदमियों ने उन को अंदर जाने से रोका कप्तान ने तोप सर की, बलवा हो गया तलवारें चलने लगीं। एक सर्कारी चोबदार चेतराम ने राजा से बड़ी बेअदबी की कहने लगा कि यहां एक २ सिपाही गवर्नर जेनरल है अगर तुम्हारा कोई आदमी ज़रा भी चूं करेगा तुम्हारे और तुम्हारी रानियों के पैरों में रस्सियां बांध कर सरेबाज़ार खींचता हुआ

लार्ड साहिब के सामने लेजाऊंगा राजा ने पैर फेला दिया कि भाई ला रस्सी और बांध देर क्यों करता है। राजा के चचेरे भाई बाबू मनियारसिंह के मुंह से यह निकल गया कि किसका मक़दूर है जो राजा के पैर में रस्सी बांधे चेतराम बोला कि चेतसिंह और चेतराम की गुफ़्तगू में दूसरा कौन मसख़रा दख़ल देता है। मनियारसिंह होंठ काट कर चुप हो रहा जब बाहर बलवा हुआ। चेतराम अपनी मौत से अचेत उछल कर राजा से जा लिपटा और तिलंगों को पुकारा। जब तिलंगे तलवार ले कर राजा की तरफ़ दौड़े। राजा के साथियों ने झट पहरे में से अपने हथियार उठा लिये॥ बाबू मनियारसिंह के बेटे ननकूसिंह ने एक ही तलवार में चेतराम का काम तमाम किया भीतर भी लड़ाई शुरू हो गयी तिलंगों के पास कारतूस न था सब के सब मारे गये अगर राजा मनियारसिंह की सलाह मानता और अपनी सिपाह समेत उस वक़्त माधोदास के बाग़ में जहां हेस्टिंग्ज़ का डेरा था और वे फ़ौज वह अकेला रह गया था जा कर उसे अपने क़ाबू में कर लेता और फिर मिन्नत समाजत से पेश आता। अपनी दिली मुराद को पाता॥ लेकिन राजा ने सदानंद बख़्शी की सलाह पसंद की और खिड़की की राह पगड़ियों के बसीले से उतर किश्ती पर सवार हो गंगा पार रामनगर चला गया। और फिर वहां से कुछ दिन अपने क़िलों में ठहर कर जब सर्कार की हर तरफ़ फ़तह और अपने सिपाहियों की शिकस्त सुनी ग्वालियर को भाग गया॥ हेस्टिंग्ज़ ने बलवंतसिंह के नवासे राजा महीपनरायनसिंह को बनारस के राज पर बिठाया। गोया हक़ हक़दार को पहुंचाया॥ लेकिन बेचारे चेतसिंह के निकालने से जैसा बिचारा था। वैसा कुछ ख़ज़ाना हाथ न लगा॥ कहते हैं कि राजा चेतसिंह का दीवान बाबू जोसानसिंह अपने मालिक से बिगड़ कर हेस्टिंग्ज़ से जा मिला था। और उसी ने उस के कान भरे थे कि राजा के पास करोड़ों रुपये का ख़ज़ाना है ज़रा सी धमकी में देदेगा॥

सन् १७८७ में हेस्टिंगज़ इस्तीफ़ा देकर इंगलिस्तान को १७८७ ई०
चला गया। और मेक्फ़र्सन* जो कौंसल का बड़ा मिम्बर था
गवर्नर जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगा॥

उधर इंगलिस्तान में सन् १७८४ के दर्मियान पार्लामेंट के हुक्म से एक महकमा बोर्ड आफ़ कंट्रोल का मुक़र्रर हो गया था उस में बादशाही कौंसल के छ वज़ीर बैठते थे। और वह कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स से बालादस्त थे॥ तिजारत के सिवाय हिंदुस्तान के सारे कामों पर उन को पूरा इख़्तियार था। और कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स को सब काम उन की मर्ज़ी के मुताबिक करना पड़ता था॥ गवर्नर और गवर्नर जेनरल भी उन्हीं की मंज़ूरी से मुक़र्रर होता था। निदान बोर्ड आफ़ कंट्रोल के मुक़र्रर होने से यहां के कामों में बड़ा फ़र्क़ आ गया॥ अब तक यहां वालों को निरी कम्पनी यानी सौदागरों की एक जमाअत से काम था। और अब इंगलिस्तान के बादशाही वज़ीरों से काम पड़ा॥ दुश्मनों का ज़ोर घटा। और रअय्यत का भरोसा बढ़ा॥

लार्ड कार्नवालिस

सन् १७८६ में लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जेनरल मुक़र्रर १७८६ ई०
हुआ। और यहां आया॥

चिवाङ्कोडु के राजा से अंगरेज़ों का अहदनामा हो गया था इसी लिये जब सन् १७८६ में टीपु ने नाहक़ तक़रार बढ़ा कर १७८६ ई०
चिवाङ्कोडु पर चढ़ाई की। अंगरेज़ों को राजा के बचाव के लिये टीपु पर चढ़ाई करनी पड़ी॥ लार्ड कार्नवालिस हैदराबाद के नव्वाब निज़ामुलमुल्क और पेशवा से आपस की मदद का क़ौल क़रार ले कर खुद मंदराज गया और टीपु के मुल्क मैसुर पर चढ़ाई कर दी। बम्बई से भी कुछ अंगरेज़ी फ़ौज आयी थी

---

* यह साहिब हिंदुस्तान में रोज़गार की तलाश को अर्काट के नव्वाब के मुख़्तार बन के आये थे॥

ज़िले ज़िले घाटे घाटे और क़िले क़िले लड़ाई होने लगी॥ जब टीपू के कई मज़बूती में मशहूर पहाड़ी क़िले सर्कार के क़ब्ज़े में आ गये। और सर्कारी फ़ौज लड़ती भिड़ती फ़त्तह के
१७९२ ई० निशान उड़ाती सन् १७९२ में टीपू की राजधानी श्रीरंगपट्टन के अंदर जा पहुंची और क़रीब था कि क़िले पर जिस में टीपू घुसा हुआ था हमला करे॥ टीपू ने अपने दोनों लड़कों को ओल में लार्ड कार्नवालिस के पास भेज दिया। और तीन करोड़ तीस लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च और आधा मुल्क अंगरेज़ और नव्वाब और मरहठों को दे कर आपस में सब के साथ सुलह रखने का अहदनामा लिख दिया॥ उस आधे मुल्क से जो टीपू ने दिया। अंगरेज़ों के हिस्से में मलीबार कुड़ग दिंदीगल और बारह महाल आया॥

१७९३ ई० सन् १७९३ में अंगरेज़ों की फ़रासीसियों से फिर लड़ाई छिड़ जाने के सबब पटुच्चेरी वग़ैर: उन के इलाक़ों में सर्कार ने अपना क़ब्ज़ा कर लिया। लार्ड कार्नवालिस इंगलिस्तान को सिधारा बंगाले और बनारस में ज़मींदारों के साथ इस्तिमरारी बंदोबस्त इसी ने किया॥ जब तक रहेगा उस का नाम इस देस में नेकी के साथ बना रक्खेगा। लार्ड कार्नवालिस की जगह पर सरजान शोर जो कौंसल का अव्वल मिम्बर था गवर्नर जेनरल हुआ॥

१७९५ ई० सन् १७९५ में कर्नाटक का नव्वाब मुहम्मदअली मर गया। उस का बड़ा बेटा उमदतुलउमरा उस की जगह पर बैठा॥

१७९७ ई० सन् १७९७ में नव्वाब वज़ीर आसिफ़ुद्दौला मर गया। वज़ीरअली उस की जगह पर बैठा॥ लेकिन पीछे से सर्कार को मालूम हुआ कि वह उस का असली लड़का नहीं है तब वज़ीरअली को मसनद से उठा कर आसिफ़ुद्दौला के भाई सआदतअलीख़ां को मसनद पर बिठाया। सआदतअलीख़ां ने अंगरेज़ों को अवध में दस हज़ार फ़ौज रखने के लिये छिहत्तर लाख रुपया साल ख़र्च देने का अहदनामा लिख दिया और इलाहाबाद का ज़िला भी उन के हवाले किया॥

अर्ल आफ़ मार्निंगटन यानी मार्क्विस आफ़ विलिज़्ली

सन् १७६८ में सर जान शोर ने इंगलिस्तान जा कर लार्ड टेन- १७६८ ई०
मोथ का ख़िताब पाया। और यहां उस की जगह पर अर्ल आफ़-
मार्निंगटन जो फिर पीछे से ख़िताब पाकर मार्क्विस आफ़
विलिज़्ली कहलाया गवर्नर जेनरल हो कर आया॥

अगर्चि टीपू ने मुश्किल के वक़्त अंगरेज़ों से सुलह करली थी। पर लाग की आग से उस की छाती बराबर जलती रही॥ मार्निंगटन को साबित होगया कि वह फ़रासीसियों से ख़त किताबत रखता है। और उन के मुल्क से मदद मंगाने की फ़िक्र करता है॥ यह बड़ा ज़बर्दस्त गवर्नर जेनरल था। झट पट मंदराज में फ़ौज जमा होने का हुक्म दे दिया॥ और टीपू को लिख भेजा कि या तो मलीबार की तरफ़ समुद्र कनारे के सब इलाक़े दे कर और फ़ौज जमा होने में जो ख़र्च पड़े उसे चुका-कर आगे को अहदनामा लिख दो कि फ़रासीसियों से कभी किसी तरह का कुछ सरोकार न रक्खोगे जो फ़रासीसी तुम्हारी अमलदारी में हों तुर्त निकाल बाहर करो और सर्कारी रज़ीडंट को अपने यहां रहने की जगह दो। नहीं तो सर्कार को अपना दुश्मन समझो॥ जब टीपू ने इस का कुछ जवाब न दिया मंदराज और बम्बई दोनों तरफ़ से अंगरेज़ी फ़ौज ने उस के मुल्क पर चढ़ाई की। हैदराबाद के नव्वाब की फ़ौज भी अंगरेज़ों के साथ थी॥ पेशवा सेंधिया की बहकावट से अलग रहा। श्रीरंगपट्टन से बीसकोस इधर अंगरेज़ों की टीपू से लड़ाई हुई टीपू शिकस्त खाकर पीछे हटा॥ और यह सोच कर कि अंगरेज़ी फ़ौज उसी राह से आवेगी जिस से पहले आयी थी बिलकुल घास और चारा जो उस में था नास करवा दिया। लेकिन जब सुना कि अंगरेज़ों ने दूसरी राह ली उस का जी बिलकुल टूट गया॥ और अपने सिपाहियों से साफ़ कहा कि अब मेरे दिन आन पहुंचे। उन्हों ने यही जवाब दिया कि आप के साथ हम भी कट मरेंगे॥ निदान अंगरेज़ों ने जाकर श्रीरंगपट्टन घेर लिया नव्वाब और पेशवा की फ़ौज तो तमाशा देखती थी लेकिन